श्री गणेशाय नमः

श्री श्याम देवाय नमः　　　　श्री हनुमते नमः

श्री श्याम भजन गंगा

भाग -१६

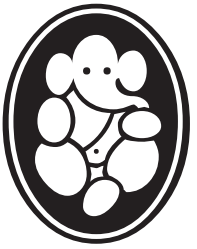

- रचयिता: -

विनोद अग्रवाल ''हर्ष''

पंजीकृत आजीवन सदस्य

दी स्क्रीन राईटर्स एसोसियेशन, मुम्बई

दूरभाष (मो॰) : 9831295444

Web : www.vinodharsh.com

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री गणेश वन्दना	
गोरां जी का लाला थाने आयां सरसी	1
म्हारे आंगणे पधारो देवा थांसु अरजी है	2
श्री पित्तरेश्वर वन्दना	
पित्तरेश्वर पितराणी थारे चरणां में परणाम	3
श्री शिव वन्दना	
भोले ओ बम बम भोले	4
शिव रात अनोखी आई चहुं ओर बजे	5
श्री शक्ति वन्दना	
जग सेठाणी माँ ब्रह्माणी भरदे झोली	6
ले थाम ले अम्बे माँ हाथ अब मेरा	7
शरण में पड़ा हुँ मुझे माँ बचाले	8
सुने किसी ने नही मेरे जज्बात	9
श्री राणी सती जी वन्दना	
जीवन भर दादी की महिमा गायेगें	10
दादी का मंगल रोज करोगे	11
भादो का मेला आता है हर साल	12
माँ राणीसती सुणले तेरो लाल	13
सतियों की गाथा घर घर	14

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री हनुमत वन्दना	
घुस गया बन्दर रे सोने की लंका	15
चुन चुन फल पक्के खाये कच्चे फल	16
बंदगी में प्रभु राम की तूने तनमन	17
बाबा म्हाने थारी यादड़ली सतावे	18
माता अंजनी का लाला बाबा सालासर	19
वीर बलि हनुमान ने ये ठाना है	20
सालासर हनुमान बाबा थारे	21
श्री गऊ माता वन्दना	
आगे आगे गईया पीछे बछड़ा चला	22
रंभाती रही थी मैं बिल्कुल ना	23
वैतरणी से हमको तू पार	24
श्याम प्रभु का उत्सव भगतों	25
श्री श्याम वन्दना	
अंगना बुहारो, द्वार सजाओ	26
अगर हम ना होते हारे हुए तो	27
अन्त समय जब मेरा हो अन्तिम	28
अपना तो संवरिया ये कैसा नाता है	29
आखिरी घड़ी में बाबा श्याम म्हाने	30
आफतों का मारा मुश्किलों से हारा	31

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री श्याम वन्दना	
आजा रे श्याम मै तो हारा	32
आजा ओ साँवरे तुझको मेरा मन	33
एक तमन्ना साँवरे तेरे दर	34
ओ श्याम खाटु वाले तस्वीर	35
कन्हैया अब आजा इन्तजार है	36
कान्हो कुँज गली में लूक मीचणी	37
कान्हुड़ा म्हारी बात ना थारे सै	38
किरपा का प्रभु सिर पे हाथ हो,	39
क्या करूँ भेंट तुझको मेरे सांवरे	40
क्या से क्या कर दिया सांवरे	41
क्या करुं सखी री आयो न	42
क्याँकी है नाराजी म्हासुं बोलो	43
किस बात की चिन्ता है किस बात	44
किसी का दिल चुराने को नजर	45
कैसे करूँ तुम्हारा मैं शुक्रिया	46
कुँज बिहारी जी तुम बिन कौन	47
घड़ी घड़ी तु क्युँ मुलके दिल	48
चन्दन से चौक पुराओ रे	49
जनम जनम की सेवा देना	50
जनम जनम का दास हुँ तुम्हारा	51
जब से दयालु तेरी शरण में	52
जब जब जीवन नैया मेरी	53

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
जब ज्योत जले कान्हा दातार	54
जिन्दगी छोटी मिली है	55
जिसने भी श्याम देखा वो ही	56
जीतने की उम्मीद में मैं साँवरे	57
जीमों जी बाबा जी मनवार	58
जैसे जैसे दरपे तेरे झुकता	59
जो मेरे दर्द को मेट दे साँवरे	60
जो थे ही दयालु बिसराओ	61
झूठे रिश्तेदारों का व्यवहार है	62
ठुमक ठुमक कर नाचो सारे	63
तुझको सांवरे अपना जानुं रे	64
तेरे चरणों में रहने की कसम	65
तेरे चरणों से प्यार करुँ तेरे	66
तेरे दरपे आया मैं जब से तूने	67
तेरी मुस्कां ये प्यारी प्यारी	68-69
तेरे द्वार का हुँ सांवरे भिखारी	70
थारो साँचो है दरबार म्हारा	71
थे ना सुणो तो कुण सुणसी	72
थे ही सुणस्यो जी दयालु थे	73
दामन खाली झोली खाली खाली	74
देख मेरा सांवरा कितना दयावान	75
नजर उठा जरा तुम्हारे पास	76
ना करता कोई ना करेगा कोई,	77

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री श्याम वन्दना	
प्रभु ब्याज चुका ना सकुं मूल कैसे	78
फर्क बड़ा है प्रेमी और राजा में	79
बस गयो तिरलोकी नाथ म्हारी	80
बहुत सह लिया अब सभ्भालो	81
बाबा श्याम दूजो काम मैं तो	82
बाबा जरा कहदे पूछे ये दिवाना	83
बाबा मुझको भूल न जाना भूल	84
बिछा दो आज पलकों को	85
बिन बोल्यां सब काम बणावे	86
बीच मझधार हाथों छूटी पतवार	87
बैठ्यो कागलो मुण्डेर ऊपर	88
भूले से ना भुलुं कभी मै तो	89
मन के दर्पण में तेरा दीदार	90
मनड़े ने लुभावे भोली सूरत	91
मंदिर सजा लिया है दीपक	92
मुझे अपनी शरण मे ले लो	93
मुझे ले चलो जहाँ तुम बाबा	94
मुझे श्याम सिवा कोई और	95
मुश्किल की घड़ियों में कोई	96
मुस्कान तेरी सांवरिया	97
मेरे मन की बात बाबा तन्ने	98
मेलो आयो खाटु बेगा बेगा सा चालो,	99

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री श्याम वन्दना	
मैं तो तेरा हुआ सांवरे तेरा रहुंगा	100
मैं तो तेरी कठपुतली तेरा हुकम	101
मैं तुझको भुला दुँ अगर सांवरे	102
मैं निर्बल हुँ इस निर्बल का	103
म्हारी पीड़ हरो घनश्याम आज	104
म्हारी टेर सुणो दीनानाथ श्याम	105
ये आँखे नशीली ये भोली सी	106
ये परदा हटादो हमे दर्शन	107
ये भोली सी सूरत ये बाँकी	108
रुस्या कइयाँ श्याम बताणो	109
रोया था रोया हुँ रोऊँगा सांवरे	110
लीले की सवारी तीन बाण	111
विनती करता हुँ पनाहों में	112
वो दिन कभी ना आये जीवन में	113
श्याम अपनी शरण लीजिये मोहे	114
श्याम तेरे नैन मतवाले अमृत	115
श्याम शमां तु है तो मैं परवाना	116
श्याम ही चन्दा श्याम ही तारे	117
श्याम सुनते सदा इक भरोसा	118
श्याम हमारी बाँह पकड़लो	119
श्याम की करूँ मैं बंदगी श्याम बिना	120

विषय सूची

भजन	पृष्ठ संख्या
श्री श्याम वन्दना	
श्याम शरण में आ जा रे	121
शायद आ जायेगा बाबा को	122
शिकवा करूँ मैं कैसे कोई	123
सारी दुनिया में गूँजे थारो नाम	124
सिलसिला खाटू में बाबा	125
सुख के दीप जलादो प्रभु	126
सुनले ओ साँवरे मेरी ये	127
सुनले फरियाद मेरी आखँ	128
सेवा करने वालों का बाबा है	129
हारे का सहारा है दुनिया	130
हिचकी आवे रे सांवरा मन्ने	131
है मुझे सांवरे बस तेरा इन्तजार	132
आरती	
क्षमा याचना	133
श्री श्याम आरती	134
श्री श्यामजी की आरती	135
श्री हनुमानजी की आरती	136

श्री गणेश वंदना

(तर्ज : अटक्योड़ी नाव पार...)

गोरां जी का लाला थाने आयां सरसी,
लाडुड़ां को भोग लगायां सरसी ।। टेर ।।

मोती चूर का लाडु बणवाया,
मेवा मिसरी मांय मिलाया,
प्रेम सुं खुवावाँ थाने खायां सरसी ।। १ ।।

थारे सागे रिद्ध-सिद्ध आसी,
लिक्ष्मी जी किरपा बरसासी,
लाभ-शुभ सागे थाने ल्यायां सरसी ।। २ ।।

मूसे चढ़कर आप पधारो,
म्हारा अटक्या कारज सारो,
अरजी ने सुण देवा आयां सरसी ।। ३ ।।

जद जद थासुं अरज लगाई,
हाथुं हाथ करी थे सुणाई,
''हर्ष'' को मान बढ़ायाँ सरसी ।। ४ ।।

श्री गणेश वंदना

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलिये)

म्हारे आंगणे पधारो देवा, थांसु अरजी है बारम्बार जी,
थारे आयां ही गणपत होसी, म्हारो अटक्योड़ों बेड़ो पार जी ।।

बेगा सा आओ किरपा दिखाओ, रिद्धिसिद्ध ने सागे ल्याओ जी,
अटक्या पड़या म्हारा काम घणेरा, आके थे पूरा कराओ जी,
थारी भगतां ने है दरकार जी, थारे हाथां में म्हारी पतवार जी ।।
थारे आयां ही गणपत...।। १ ।।

ध्वजा नारियल फल और मेवा, थारे म्हें भोग लगावाँ जी,
विघ्न हटाओ कष्ट मिटाओ, चरणां में धोक लगावाँ जी,
देवा म्हापे करो उपकार जी, म्हाने थारो ही है आधार जी ।।
थारे आयां ही गणपत...।। २ ।।

थे ना सुणो तो कीने सुणावाँ, मनड़े री बात्याँ म्हारी जी,
म्हारी गई तो थे ही बताओ, कईयां रह्वेली थारी जी,
थारो ''हर्ष'' करे मनवार जी, म्हारा थे ही तो खेवणहार जी।।
थारे आयां ही गणपत...।। ३ ।।

श्री पित्तरेश्वर वन्दना

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...)

पित्तरेश्वर पितराणी थारे चरणां में परणाम,
घणी सकलाई थारी, करो थे रक्षा म्हारी ।। टेर ।।

दुख की घड़ी में म्हारे, आडा थे आवो,
विपदा में आके म्हाने, रस्तो दिखावो,
मुश्किल रस्तो पार कराओ म्हारी आंगली थाम ।।
घणी सकलाई थारी... ।। १ ।।

रोज नियम सुं थारे, धोक म्हे लगावाँ,
पाणी की घण्टी थारे, मंड में ढुलावाँ,
पैण्डे मांही दिवलो चासां रोज सुबह और शाम ।।
घणी सकलाई थारी... ।। २ ।।

टाबर हाँ थारा थे ही, मायत हो म्हारा,
''हर्ष'' म्हें जईंया का हाँ, वंशज हाँ थारा,
भूल्यां चित सुं सदा भुलाओ टाबर अपणो जाण ।।
घणी सकलाई थारी... ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : गंगा मैया में जब तक कि पानी रहे ...)

भोले, ओ बम बम भोले - २
ओऽऽऽ, गंगा मैया के तट पे बसेरा तेरा,
मैया तारा के सन्मुख है डेरा तेरा ।। टेर ।।

वासी शमशानों का तु कुहाये,
बैठा मरघट पे धूनी रमाये,
तू है भूतों का नाथ, रहता भूतों के साथ,
मैया काली की नगरी से नाता तेरा, नाता तेरा ।। १ ।।

ज्योर्तिलिगों के सम तेरा द्वारा,
तेरे भगतों को तेरा सहारा,
तूने जो कर दिया, कोई कर ना सका,
लेख ब्रह्मा का भी टाले बाबा मेरा, बाबा मेरा ।। २ ।।

गुरु महिपालजी तुझको ध्याये,
उनकी सेवा ना जाये भुलाये,
जहाँ नजरें उठे, हमें वो ही दिखे,
''हर्ष'' सच्चा था भोले वो सेवक तेरा, सेवक तेरा ।। ३ ।।

श्री शिव वन्दना

(तर्ज : मेरा दिल ये पुकारे आजा...)

शिव रात अनोखी आई, चहुं ओर बजे शहनाई,
दूल्हा बनके भोले नाथ, लेके आये हैं बारात ।। टेर ।।

माँ भवानी के भगतो नसीबा खुले हाँ खुले,
बैठ नन्दी पे जगके विधाता चले हाँ चले,
नारद वीणा थामे हाथ, नाचे ब्रह्मा-विष्णु साथ,
माँ लक्ष्मी बाराती बन आई ।। १ ।।

मैना रानी की स्वागत में पलकें बिछी हाँ बिछी,
जय माला लिये मैया गोरां खड़ी हाँ खड़ी,
लिये पुष्पों का हार, गोरां करे इन्तजार,
मारे लाज के वो शरमाई ।। २ ।।

भोले बाबा मेरी माँ की मांग भरे हाँ भरे,
देव अम्बर से फूलों की बरखा करे हाँ करे,
गूंजे गूंजे जयकार, तीनों लोकों में अपार,
नाचे खुशियों से लोग लुगाई ।। ३ ।।

शिव-शक्ति मिलन की ये पावन घड़ी हाँ घड़ी,
''हर्ष'' दोनों के दर्शन को दुनिया खड़ी हाँ खड़ी,
देखे सारी कायनात, भोले बाबा की बारात,
ये रात नसीबों वाली आई ।। ४ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज :- गाड़ी वाले मुझे बिठा ले...)

जग सेठाणी माँ ब्रह्माणी भरदे झोली आज,
पसारे हाथ खड़ा ।। टेर।।

लाचारी ने घेरा माँ दुनियाँ ने मुहँ फेरा माँ,
कोई सहारा ना जगमें एक सहारा तेरा माँ,
शरणागत हुँ मेरे सिर पे हाथ फिरादे आज ।।
पसारे हाथ खड़ा ।। १ ।।

महर नजर मुझपे भी हो भरो खजाना मेरा माँ,
सुनी किसी ने ना मेरी सुनो फसाना मेरा माँ,
ना कोई संगी हाथ की तंगी मेट भवानी आज ।।
पसारे हाथ खड़ा ।। २ ।।

लोग पराया कर देते तुही तो अपनाती माँ,
ठुकराये को जगदम्बे तुही गले लगाती माँ,
गिर ना जाये ''हर्ष'' तुम्हारा बाहँ पकड़ले आज ।।
पसारे हाथ खड़ा ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : लो आ गई उनकी याद...)

ले थाम ले अम्बे माँ, हाथ अब मेरा,
ना छोड़ना माँ कभी, साथ अब मेरा ।। टेर ।।

बेटा हुँ मैं तुम्हारा, तेरा ही आसरा है,
तेरे सिवा जहाँ में, मेरा ना दूसरा है,
जग छूट जाये चाहे, छूटे न साथ तेरा ।।
ले थाम ले अम्बे... ।। १ ।।

तेरे ही दम पे मैया, संसार सारा चलता,
तेरी दया से जननि, परिवार मेरा पलता,
होते तेरे रहे क्युं, बेटा अनाथ तेरा ।।
ले थाम ले अम्बे... ।। २ ।।

तेरे ''हर्ष'' की तमन्ना, इतनी सी है भवानी,
चरणों में तेरे बीते, सेवक की जिन्दगानी,
रखना सदा माँ सिर पे, किरपा का हाथ तेरा ।।
ले थाम ले अम्बे... ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : मोहब्बत की झूठी कहानी...)

शरण में पड़ा हुँ, मुझे माँ बचाले,
आँचल में अपने मुझे तु छुपाले ।। टेर ।।

अकेला हुँ मैया, बड़ा घबराऊँ,
पराये जगत में, तुझे अपना पाऊँ,
तेरे चरणों में आज मुझको ''बिठाले''-२ ।।
शरण में पड़ा हुँ... ।। १ ।।

बेटे का रोना माँ, सहने ना पाती,
वो झट दौड़ आती, गले से लगाती,
मैं नादान हुँ मुझको गोदी ''उठाले''-२ ।।
शरण में पड़ा हुँ... ।। २ ।।

करुणा की देवी, करुणा दिखा दे,
तेरे ''हर्ष'' के मैया, दुखड़े मिटादे,
पागल समझ के मुझे तु ''निभाले''-२ ।।
शरण में पड़ा हुँ... ।। ३ ।।

श्री शक्ति वन्दना

(तर्ज : जग रुठे मेरा सांवरिया सरकार न रुठे...)

सुने किसी ने नही मेरे जज्बात भवानी,
तुम्हें सुनाने आया हुँ सुन आज कहानी ।। टेर ।।

हँसने की चाहत ने दादी, हर पल ही मुझे रूलाया है,
हमदर्द नहीं कोई मेरा-२, ''ये दर्द ही मेरा साया है - २''
पीड़ जिगर की किसी ने ना समझी ना जानी ।। १ ।।

छल झूठ कपट के रिश्ते हैं, हर दिल में भरा अंधेरा है,
मैं किसी का ना हुँ दुनियां में-२, ''ना कोई यहाँ पे मेरा है-२''
अब तो निभेगी मैया अपनी प्रीत पुरानी ।। २ ।।

खुशियाँ मांगी जिनसे मैंने, उनसे गम का उपहार मिला,
साहिलकीतमन्नादिलमेंथी-२,''दादीमुझकोमझधारमिला-२''
मझधारों से नैया तुमको पार लगानी ।। ३ ।।

ले हाथ पकड़ले तु मेरा, ये दुनिया भी झुक जायेगी,
कलतकजिसनेमाँठुकराया-२,''उन्हेंआजशरमतोआयेगी-२''
''हर्ष'' भगत की तुमको ही अब लाज बचानी ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : जी लेगें सरकार तुम्हारी थारी में...)

जीवन भर दादी की महिमा गायेगें,
हम भाव भरी चुनड़ी माँ तुझे उढ़ायेगें ।। टेर ।।

लाल चुनरिया ओढ़ के मेरी दादी खुश हो जाती है,
चुनड़ी के पल्ले से भगतों रहमत वो बरसाती है
दादी की वो रहमत हम भी पायेगें ।। १ ।।

ओढ़ के चुनड़ी रण में कूदी दुश्मन चकनाचूर हुये,
लहराई जब माँ की चुनरिया संकट सारे दूर हुये,
किर्तन में हम तेरी चुनर लहरायेगें ।। २ ।।

भांत भांत की चुनड़ी दादी तुझको भक्त उढ़ाते हैं,
बड़े प्रेम से चुनड़ी उत्सव सेवक खूब मनाते हैं,
चुनड़ी का वो उत्सव हम भी मनायेगें ।। ३ ।।

चुनड़ी की छैंया के नीचे ''हर्ष'' हमें हरदम रखना,
हम बच्चों पे रहे बरसता तेरी ममता का झरना,
ममता की बून्दों में हम भी नहायेगें ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : बाबा की किरपा जिसपे हो जाये...)

दादी का मंगल, रोज करोगे,
मौज करोगे, मौज करोगे,
दादी जी ध्यान देगी, हाथों को थाम लेगी ।। टेर ।।

पाटे पे दादी की, फोटो लगाओ,
टीका लगाओ, पुष्प चढ़ाओ,
धूप-दीप से, वंदन करोगे ।। १ ।।

सुबह करो चाहे, शाम को करना
मौका मिले जब, गुणगान करना
उत्तम घड़ी वो ही, जब भी करोगे ।। २ ।।

नवमी तिथि हो, या मंगल वार हो
मावस को मैया का, ये मंगलाचार हो
शुद्धि-सफाई का, ध्यान धरोगे ।। ३ ।।

पाठ के बीच में, आसन ना छोड़ो,
दादी के चरणों से, नाता तुम जोड़ो
''हर्ष'' कहे मन से, मंगल करोगे ।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : मेला दिलों का आता है ...)

भादो का मेला आता है, हर साल आके चला जाता है,
झुंझणु की गलियां, लगती बड़ी प्यारी,
ओढ़ चुनरिया बैठी, दादी जी हमारी ।। टेर ।।

दादी के दरपे, आये हैं भक्त अनेक,
आजा प्यारे, चौखट पे माथा टेक,
जग वाले देते हैं मेले की मिसालें,
आँखों में घूमती है दादी की धमालें,
मेला धमालों का आता है हर साल...।। १ ।।

दुनिया आई, बंदे तु भी चल,
रस्ता देखे, दादी जी हर पल,
एक बार चल कर देखले नजारे,
भूल नहीं पायेगा मेले की बहारें,
मेला बहारों का आता है हर साल ...।। २ ।।

मेरी दादी, को चुनड़ी चढ़ाके देख,
पल में बदले, तेरी किस्मत का लेख,
दोनों हाथों बैठी है दादी जी लुटाने,
लूटले तु जाकर मैया के खजाने,
मेला खजानों का आता है हर साल ...।। ३ ।।

लौटें घर को, तो आँखे बहे कलकल,
बच्चे बिछड़े, मेरी दादी से जिस पल,
करते है ''हर्ष'' सारे आने के फिर वादे,
दिल में संजो के लाते मेले की वो यादें,
मेला यादों का आता है हर साल ...।। ४ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादां...)

माँ राणीसती सुणले, तेरो लाल बुलावे है,
इब खोल तेरी मुट्ठी, क्युं जी ने जलावे है ।। टेर ।।

तेरे होता क्युं दादी, टाबर तेरो तरसे,
बिन सावण भादो के, मेरी आंखड़ल्याँ बरसे,
क्युं देर करे दादी, मेरे सबर न आवे है ।।
माँ राणीसती... ।। १ ।।

चरणां में अरज करूँ, कल्याण करो मेरो,
मानु नालायक हुँ, पण टाबर हुँ तेरो,
माँ के बिन बेटे की, कुण पीड़ मिटावे है ।।
माँ राणीसती... ।। २ ।।

तेरी मुट्ठी में दादी, किस्मत है बंद मेरी,
इने खोल के माँ करदे, तकदीर बुलंद मेरी,
तेरे ''हर्ष'' की सुण मैया, क्युं देर लगावे है ।।
माँ राणीसती... ।। ३ ।।

श्री राणी सती जी वन्दना

(तर्ज : हम ख्वाजा वाले हैं...)

सतियों की गाथा घर घर पहुंचाने वाले हैं,
हम दादी वाले हैं सुनो जी हम दादी वाले हैं ।। टेर ।।

मेहन्दी वाले हाथों से जब माँ ने खड़ग उठाई-२
रक्त से भूमि लाल हुई ''दुश्मन की लाश बिछाई''-२
उस माटी से मस्तक तिलक लगाने वाले हैं ।।
हम दादी वाले हैं... ।। १ ।।

धन्य देवसर भूमि जिसपे राणीसती अवतारी-२
चहुं दिशा में दादी जी की ''हुई किर्ति भारी''-२
उसी कीर्ति को जग में फैलाने वाले है ।।
हम दादी वाले हैं... ।। २ ।।

सतवन्ति के सत की महिमा, ''ऋषियों ने है गाई''-२
जिनके आगे यम भी हारे ''ऐसी है सकलाई''-२
''हर्ष'' उसी दरबार में शीश झुकाने वाले है ।।
हम दादी वाले हैं... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : चढ़ गया उपर रे अटरिया पे लोटन कबूतर रे...)

घुस गया बन्दर रे, सोने की लंका के अंदर रे,
रावण बेचारा, करमों का मारा, रह गया रो कर रे ।।

बोला था बंदर की पूँछ जला दो,
लंका में घुसने की जुर्रत बता दो,
कर गया गड़बड़ रे... ।। १ ।।

वानर समझ के पूँछ को छेड़ा,
लंका का कोई कोना न छोड़ा,
फूँकी है उड़ उड़ रे...।। २ ।।

रावण के मन में भारी गिला है,
ओछे करम का फल ये मिला है,
पछताये भिड़ कर रे...।। ३ ।।

पापी ठगा सा लंका को देखे,
''हर्ष'' किया क्या मन में ये सोचे,
काँपे है थर थर रे...।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : कजरा मोहब्बत वाला...)

चुन चुन फल पक्के खाये, कच्चे फल तोड़ गिराये,
लाया संदेशा दरवान, ताण्डव करे है हनुमान,
रावण को गुस्सा आया, पलमें आदेश सुनाया,
जारी किया ये फरमान, पकड़ के लाओ हनुमान ।। टेर ।।

उनको पकड़ने ज्युँही, रावण के दूत आये,
मारी हुंकार उनको, पल भर में मार भगाये,
अक्षय अभिमानी आया, अपनी छाती फुलाये,
पापी को पटक पछाड़ा, मुक्का छाती पे मारा,
नरक सिधारा शैतान, धुली चटाये हनुमान ।। १ ।।

क्रोधित हो सारे तरुवर, जड़ से उखाड़ डाले,
रावण की सुन्दर बगिया, पल में उजाड़ डाले,
सन्मुख जो आया उसका, हुलिया बिगाड़ डाले,
डर करके सारे भागे, रावण से बोले जाके,
बंदर बड़ा है बलवान, पकड़ न पाये हनुमान ।। २ ।।

पहले को मुक्का मारा, दूजे को लात मारी,
पिट करके लंका भागी, दानव जमात सारी,
आकर के मेघनाथ ने, ब्रह्म की पाश मारी,
ब्रह्मा का मान बढ़ाये, बंधके लंका में आये,
रावण हुआ रे हैरान, कितना बली है हनुमान ।। ३ ।।

रावण ने पूछा काहे, दूतों को मार डाला,
मेरे अक्षय को तूने, काहे पछाड़ डाला,
''हर्ष'' बता क्या मैंने, तेरा बिगाड़ डाला,
मुझको जिसने भी मारा, मैंने उसको ही मारा,
तोड़ा है तेरा अभिमान, रावण से बोले हनुमान ।। ४ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : जिन्दगी प्यार का गीत है...)

बंदगी में प्रभु राम की, तूने तनमन लुटा डाला है,
चीर कर सीना तूने बली, प्रभु दर्शन करा डाला है ।। टेर ।।

भूल रावण ने भारी करी, जाना अदना सा बंदर तुझे,
धू धू सोने की नगरी जली, ना गई फिर बुझाई बुझे,
राम अंकित वो कुटिया बची, सारी लंका जला डाला है ।।
बंदगी में प्रभु राम की... ।। १ ।।

प्रभु ले ले जमाही कहीं, सोच चुटकी बजाते सदा,
राम होते जहाँ ये वंही, नहीं होते कभी भी जुदा,
राम सेवा ना छूटे कभी, डेरा चौखट पे ही डाला है ।।
बंदगी में प्रभु राम की... ।। २ ।।

भक्त लाखों हुए है मगर, तेरे जैसा कोई भी नहीं,
''हर्ष'' सेवा सिवा राम की, तुझे कुछ भी तो भाता नहीं,
राम पाये नहीं तो बली, तोड़ी मनकों की वो माला है ।।
बंदगी में प्रभु राम की... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : तेरे होठों के दो फूल प्यारे प्यारे..)

बाबा म्हाने थारी यादड़ली सतावे,
कइयां कोन्या म्हाने सालासर बुलावे,
थारी भगतां ने ओल्युं आवे जी ।। टेर ।।

थारी रात्युं याद सतावे, म्हारी आख्याँ में नींद न आवे,
म्हे रोटी खावण बैठां, म्हाने रोटी भी कोन्या भावे,
थारो मंदरियों महाराज, म्हारा सालासर सरताज,
म्हारी आख्याँ के स्यामी आवे जी ।। १ ।।

मोटी बुन्दिया का लाडु, म्हे बाबा जी भूल न पावाँ,
कद थारी रसोई को जीमण, म्हे बालाजी जा करके खावाँ,
थारो चूरमो महाराज, म्हे भी जाके खावाँ आज,
म्हारे मुण्डे मे पाणी आवे जी ।। २ ।।

इब थे ही दया दिखाओ, म्हाने सालसर धाम बुलाओ,
''हर्ष'' बिठा चरणां में, म्हारे सिर पे थे हाथ फिराओ,
छोड़ो नाराजी महाराज, थारे हाथां म्हारी लाज,
थारे दरसण की मन में आवे जी ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : अपनी तो जैसे तैसे...)

माता अंजनी का लाला, बाबा सालासर वाला,
बन गया, राम का रखवाला, ये बजरंग बाला ।। टेर ।।

लांघ कर सेतु को जिसने, सीता की सुध ली भला,
कूद पड़े सिन्धु में बाबा, सोने की लंका जला,
बांध कर दरबार में, मेघनाथ जब लाया था,
अपनी करनी पर बड़ा, दुष्ट तब पछाताया था,
खलबल मचाने वाला, लंका जलाने वाला ।।
बन गया ... ।। १ ।।

कर सके ना काम कोई, काम ऐसे कर दिये,
राम का दर्शन कराने, चीर सीना धर दिये,
मुश्किलें ये राम की खुद, कान्धे उपर झेलते,
बलियों में ये वीर ऐसे, तूफानों से खेलते,
तोड़ी मनको की माला, लाल लंगोटे वाला ।।
बन गया ... ।। २ ।।

जब लखन मुर्छित हुऐ तो, राम शोकाकुल हुऐ,
चल पड़े लाने संजीवन, बाबा ना आकुल हुऐ,
भोर की पहली किरण से, पहले बजरंग आ गये,
''हर्ष'' आँखों में प्रभु के, आँसु खुशी के आ गये,
पर्वत उठाने वाला, संजीवन लाने वाला ।।
बन गया ... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : यार पीछा छोड़ मुझ मतवाली का...)

वीर बलि हनुमान ने ये ठाना है,
लांघ समन्दर आज मुझको जाना है ।। टेर ।।

रावण ने सीता हर ली, और राम प्रभु अकुलाये,
हनुमत खोजन तुम जाओ, पल में आदेश सुनाये,
ढूंढ़ कर लाना है... ।। १ ।।

मैं एक छलांग लगाऊँ, सौ योजन पर लगाऊँ,
लंका नगरी में जाकर, माता का पता लगाऊँ,
लौट कर आना है... ।। २ ।।

है रीछपति की माया, शक्ति का बोध कराया,
ऐ ''हर्ष'' मेरी शक्ति को, अब तक मैं जान न पाया,
कपि ने माना है... ।। ३ ।।

श्री हनुमत वन्दना

(तर्ज : कीर्तन की है रात...)

सालासर हनुमान बाबा थारे क्याँको घाटो जी,
थे झोली भर भर बाँटो जी ।। टेर ।।

माया प्रभु थारी, कोई नहीं जाणी, बड़ा दिलदार हो,
धन धान सुं बाबा, झोली भरो सैं की, घणा दातार हो,
मांगणियां ने नाथ थे तो कदे भी ना नाटो जी ।।
थे झोली भर भर .. ।। १ ।।

जो हार के बाबा, थाने पुकारयो है, थे पकड़्या हाथ जी,
शरणां में आयाँ का, दुखड़ा मिटाया है, थे हाथुं हाथ जी,
शरणागत का नाथ थे ही सारा संकट काटो जी ।।
थे झोली भर भर .. ।। २ ।।

आँधी चली बाबा, कइयाँ-बताऊँ मैं, या कितणी जोर की,
यो ''हर्ष'' जाणे है, लाठी बण्या हो थे, सदा कमजोर की,
आँधिया ने नाथ हरदम थे ही आके डाटो जी ।।
थे झोली भर भर .. ।। ३ ।।

श्री गऊ माता वन्दना

(तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल...)

आगे आगे गईया पीछे बछड़ा चला,
भूखा हुँ मैं मैया मुझे दूध तो पिला ।। टेर ।।

जो ना मैया पहले मुझे थन तु चटाये,
थन से तुम्हारे भला दूध कैसे आये,
दूध रूपी मुझको माँ भोजन खिला ।। १ ।।

तेरे इस दूध पे माँ पहला हक मेरा,
मेरे पीछे पीयेगा माँ दूध जग तेरा,
प्रभु ने जो बख्शा मुझे हक वो दिला ।। २ ।।

मेरे थन चाटने से घट नहीं जायेगा,
मुझको चटादे दूध और बढ़ जायेगा,
''हर्ष'' तुम्ही से सारा जग माँ पला ।। ३ ।।

श्री गऊ माता वन्दना

(तर्ज : टूटे हुए ख्वाबों ने)

रंभाती रही थी मैं, बिल्कुल ना मलाल किया,
जिसने मेरा दूध पिया, उसने ही हलाल किया ।। टेर ।।

जननि ने जन्म दिया, कितना अहसान किया,
गईया ने दूध पिला, ''जिसको इन्सान किया''-२
उसने ही लहु से क्युँ, धरती को लाल किया ।। १ ।।

पालन करने वाली, क्या माता नहीं होती,
अपनों के सितम सहके, ''गौ माता क्युं रोती''-२
माता का वध करके, कोई न कमाल किया ।। २ ।।

कुछ पैसों के खातिर, गायें क्युं बिकती रहे,
बूचड़ खाने में वो, ''हर बार क्युं कटती रहे''-२
ये ''हर्ष'' कहे हमसे, गईया ने सवाल किया ।। ३ ।।

श्री गऊ माता वन्दना

(तर्ज : जब कोई नहीं आता....)

वैतरणी से हमको, तू पार लगाती है,
हे गऊ तु हम सबकी, माता कहलाती है ।। टेर ।।

जीवन भर तूने ही, हमें दूध पिलाया है,
बैलों ने खेतों में, माँ अन्न उपजाया है,
तेरे बछड़े का हिस्सा, तु हमें पिलाती है ।। १ ।।

गोबर को देवों ने, माँ पावन माना है,
गोबर के उपलो पे, माँ बनता खाना है,
तेरे गोबर से दुनिया, अब गैस बनाती है ।। २ ।।

तेरे मूत्र की महिमा को, विज्ञान ने मान लिया,
सर्वोत्तम औषधी है, दुनिया ने जान लिया,
तेरे मूत्र से रोगों से, मुक्ति मिल जाती है ।। ३ ।।

पहली रोटी घर में, हम तेरी बनाते हैं,
तुझे पितृपक्ष में माँ, गौ ग्रास खिलाते हैं,
इस देश में ''हर्ष'' कहे, तू पूजी जाती है ।। ४ ।।

श्री गऊ माता वन्दना

(तर्ज : जाने वाले इक संदेशा...)

श्याम प्रभु का उत्सव भगतों मिलके खूब मनाना है,
गौ माता की रक्षा का भी हमको धर्म निभाना है ।। टेर ।।

तैंतिस कोटि देवि देवता गौ माता में वास करे,
जालिम है वध करने वाले कैसे ये विश्वास करे,
उनके चंगुल से अपनी माता को हमें बचाना है ।। १ ।।

जिस गईया के गोबर को देवों ने उत्तम माना है,
उस माता के दूध का भगतों हमको कर्ज चुकाना है,
बूचड़ खाने से गऊओं को गौशाला पहुंचाना है ।। २ ।।

नियम बनालो सांवरिये का उत्सव खूब मनायेगें,
लेकिन हर उत्सव के संग में गईया एक बचायेगें,
''हर्ष'' निवेदन हर संस्था से ये ही नियम बनाना है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चौक पुराओ माटी रंगाओ...)

अंगना बुहारो, द्वार सजाओ,
श्याम प्रभु मेरे घर आये हैं,
पलकें बिछाओ, मंगल गाओ,
श्याम प्रभु मेरे घर आये हैं ।। टेर ।।

ओरे कोई गजरे लाओ रे, सांवरे को खूब सजाओ रे,
मुस्काये आज मेरे श्याम बिहारी,
ओरे कोई इत्तर लाओ रे, केशर छिड़काओ रे,
मेरे सांवरे को खुशबु है प्यारी,
नून-राई वारो, नजर उतारो ।। १ ।।

भजनों में श्रद्धा भरो, भावों की बरखा करो,
घर मेरे मालिक ने डाला है डेरा,
चरणों में ध्यान धरो, श्याम गुणगान करो,
आज संवर जाये जीवन तेरा,
मीठे भजन, सुनाओ रे सब मिल ।। २ ।।

मेरे सोये भाग्य जगे, ऐसा मोहे आज लगे,
खुशी आज द्वार मेरे आई है चल के,
देखो मेरी धड़कन बढ़ी, किस्मत द्वारे खड़ी,
अश्रु धारा इन नैनों से छलके,
अरमां ''हर्ष'', हुए मेरे पूरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये माना मेरी जां...)

अगर हम ना होते हारे हुए तो,
तुम्हें कौन हारे का कहता सहारा,
दीन जो न होते तो दीनबंधु कान्हा,
बता नाम होता कैसे तुम्हारा ।। टेर।।

पतितों ने तुमको पावन बनाया,
अजामिल सरीखों को पार लगाया,
अगर नाव हमने सौंपी न होती,
तो कैसे कुहाता खिवैया हमारा ।। १ ।।

दीन हीन हम है तो दीनानाथ है तू,
निर्बल के होते सबल श्याम है तू,
बता कैसे होता निर्धन का धन तू,
अगर जो न भरता दामन हमारा ।। २ ।।

गरीबों का परवर गरीबों का दाता,
गरीबों के बिन तु कैसे कुहाता,
इक दूसरे के पूरक है हम तुम,
''हर्ष'' बराबर का दर्जा हमारा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घर में हो तस्वीर तेरी...)

अन्त समय जब मेरा हो, अन्तिम दर्शन तेरा हो,
मुक्ति मिले मुझे श्याम, लिख दी वसीयत तेरे नाम ।।

श्याम देवाय नमः की चादर से मुझको लिपटा देना,
चंदन और केशर का टीका माथे पर लगवा देना,
कर देना पूरा अरमान ।। १ ।।

गमन करूँ जब सबके मुख में जय श्री श्याम का नारा हो,
राम तुही है श्याम तुही है जय जय घोष तुम्हारा हो,
तुमसे ही मेरी पहचान ।। २ ।।

तेरे मंदिर के आगे से मेरी अर्थी ले जाये,
जाते जाते परम पिता का दर्शन मुझको हो जाये,
मेरा हो अन्तिम प्रणाम ।। ३ ।।

जैसी सेवा मुझको दी है मेरे बच्चों को देना,
''हर्ष'' मेरे परिवार पे बाबा इतनी किरपा कर देना,
होगा तुम्हारा अहसान ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुझको ना देखुं तो जी घबराता है...)

अपना तो संवरिया ये कैसा नाता है,
देखे बिन तुझको ना मुझको चैन आता है,
तेरे सिवा मुझको तो कुछ ना भाता है,
देखे बिन तुझको ना मुझको चैन आता है ।। टेर ।।

आँखों में मेरे सूरत तुम्हारी, दिल में बसी है मूरत ये प्यारी,
जादुभरी है ये जादुगारी, मुझपे चढ़ी है तेरी खुमारी-२
लगता है होले से तु मुस्काता है ।। १ ।।

सदियों पुराना रिस्ता हमारा, मेरी तो मंजिल तेरा ये द्वारा,
होगा बता क्या तुझको गंवारा, टूटे कभी जो बंधन हमारा-२
जन्मो का ये रिस्ता असर दिखाता है ।। २ ।।

आता रहा हुँ आता रहुँगा, ध्याता रहा हुँ ध्याता रहुँगा,
''हर्ष'' तेरा हुँ तेरा रहुँगा, कहना है जो भी तुझसे कहुँगा-२
छोड़ तुझे दूजा दर रास न आता है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : होलिया में उड़े रे गुलाल)

आखिरी घड़ी में बाबा श्याम म्हाने लेबा थे ही आइज्यो,
जांवती बखत दीनानाथ म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। टेर ।।

राधा जी ल्याज्यो सागे रुक्मण ल्याइज्यो,
बांसुरी बजाता घनश्याम म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। १ ।।

राम जी ने ल्याज्यो सागे सीता माँ ने ल्याइज्यो,
सागे ल्याज्यो वीर हनुमान म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। २ ।।

गाडली ना ल्याज्यो बाबा पालकी ना ल्याइज्यो,
गोद्यां में भींच लीज्यो श्याम म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। ३ ।।

रात में ना आज्यो बाबा दिन में ना आइज्यो,
ब्रह्म बेला में लीज्यो थाम म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। ४ ।।

मोर छड़ी म्हारे सिरपे फिराइज्यो,
''हर्ष'' बुलाज्यो थारे धाम म्हाने लेबा थे ही आइज्यो ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- धूप से निकल के...)

आफतों का मारा मुश्किलों से हारा,
तु मिला मुझे तो खुशियां मिल गई.
आँसुओ से मेरे, तु पिछल गया तो,
इक नई नवेली दुनियाँ मिल गई,
लायक नही हुँ, मै तो तुम्हारे,
करते हो फिर भी तुम दया ,
इतना जो तूने दे दिया, दामन ये मेरा भर दिया ।। टेर।।

तुही तो मेरी, मंजिल दयालु, जानुं यही मैं, इक रास्ता,
मै हुँ तुम्हारा, तु है हमारा, अब ना किसी से, है वास्ता,
तुम से जुदा हो, जी ना सकुगां, तुही तो मेरा, सहारा बन गया ।।

बदहाल थी, दुनियां मेरी, जिस दिन से तु, मुझको मिला,
बदला मेरा, रुठा नसीब, ऐसा तेरा, जादु चला,
तुमने किया जो, कोई करे ना, तेरी दया से, गुजारा चल गया ।।

तुही बतादे, कैसे करेगा, ''हर्ष'' तेरा, कर्जा अदा,
थामा जो तूने, दामन ये मेरा, होना नहीं, अब तु जुदा,
झुठे है सारे, रिश्ते जहाँ के, साँची शरण में, ठिकाना मिल गया ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : रिमझिम के गीत सावन गाये...)

आजा रे, श्याम मै तो हारा, हारा,
दे सहारा, सांवरिया ।। टेर ।।

जिसे चाहा, जिसे माना, आज बन बैठा वो ही बेगाना,
तेरे दास को, तेरा आसरा, ना करेगा ये कुछ भी जमाना,
मैं तो हुँ, एक गम का मारा, मारा, दे सहारा सांवरिया ।। १ ।।

मेरी भूलें, तु भुलादे, मेरा सोया मुकद्दर जगा दे,
गिर पडुगां, दे सहारा, इस हारे हुए को जिता दे,
कितनों को, नाथ तूने तारा, तारा, दे सहारा सांवरिया ।। २ ।।

तेरे होते, मेरे दानी, तेरा बालक क्युं इतना उदास है,
तेरे ''हर्ष'' की, तु सुनेगा, मुझे इतना प्रभु विश्वास है,
साचाँ है, श्याम तेरा द्वारा, द्वारा, दे सहारा सांवरिया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बेदर्दी बालमा तुझको ...)

आजा ओ साँवरे तुझको, मेरा मन याद करता है,
तरसता है जो बरखा को, वो गुलशन याद करता है ।।

कभी भी श्याम चरणों से, मुझे तुम दूर ना करना,
बिखर के टूट जाने को, कभी मजबूर ना करना,
मेरा थामा है जो तूने, वो दामन याद करता है ।। १ ।।

प्रभु विश्वास की डोरी, मेरी ये छूट ना पाये,
तेरे दरबार से श्रद्धा का, बंधन टूट ना जाये,
रहे आबाद तुमसे जो, वो आँगन याद करता है ।। २ ।।

तेरा दर छोड़ के मुझको, कोई भी दर नहीं भाता,
तेरे इस ''हर्ष'' का आके, पकड़लो हाथ अब दाता,
तेरे दर्शन का जो प्यासा, वो सावन याद करता है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : वादा करले साजना...)

एक तमन्ना साँवरे, तेरे दर आता रहुँ,
तेरा दिया खाता रहुँ, तुझको सदा, रिझाता रहुँ,
सर को सदा, झुकाता रहुँ ।। टेर।।

अहसान इतना करदे जरा,
अरमान पूरा करदे मेरा,
चरणों की सेवा मैं पाऊँ - २
देव बड़ा ही निराला है तु,
जीवन में दे उजाला प्रभु,
अंधियारों से मुक्ति पाऊँ - २ ।। १ ।।

जबसे मुझे तेरी चौखट मिली,
ऐलान करता हुँ गली गली,
तुमसा ना देव है दूजा - २
मन मन्दिर में तू है बसा,
और न कोई तेरे सिवा,
हर साँस करे तेरी पूजा - २ ।। २ ।।

तु दानी मैं याचक तेरा,
डाल दया की भिक्षा जरा,
तेरे ''हर्ष'' की आस हो पूरी - २
तु जो मिले तो जीवन खिले,
फिर ना रहे प्रभु कोई गिले,
अब आजा मिटा ये दूरी - २ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ओ आसमान वाले...)

ओ श्याम खाटु वाले, तस्वीर से निकल,
रुठी हुई ये मेरी, तकदीर तु बदल ।। टेर ।।

देखें हैं मैंने जीवन में, जख्मों के सिलसिले,
लिखा था सब नसीब में, मुझको नहीं गिले,
असुँवन की बून्द बून्द से - २, चरणों को धो रहा,
लिख दे मेरा मुकद्दर, बेटा ये रो रहा ।। १ ।।

गलती अगर हुई तो, बख्शों मेरी खता,
किस बात से खफा है, इतना जरा बता,
भूलें मेरी भुलादे-२, चौखट पे हुँ पड़ा,
माफी तु देता हरदम, दातार है बड़ा ।। २ ।।

गिरते का हाथ थामा है, तूने ही तो सदा,
हाथों को मेरे थाम ले, अब हाथ तु बढ़ा,
तेरा ''हर्ष'' ये पुकारे- २, हारे के साथी आ,
कितने ही तारे हैं प्रभु, मुझको भी तो बचा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : किशोरी कुछ ऐसा इंतजाम...)

कन्हैया अब आजा, इन्तजार है तेरा,
तुही तो सोणा, सोणा, सोणा यार है मेरा।। टेर।।

जीवन ये मेरा मैंने तेरे, नाम किया है,
हर पल ही जुबां से तेरा, नाम लिया है ।। १ ।।

जो तुमने रूलाया मुझे तो, कौन हँसाये,
जो तुमने हसायाँ मुझे तो, कौन रुलाये ।। २ ।।

काजल की लकीरों ने तुझे, याद किया है,
आजा रे फकीरों ने तुझे, याद किया है ।। ३ ।।

इक तेरे सिवा दिल में कोई, चाह नहीं है,
ऐ ''हर्ष'' जमाने की कोई, परवाह नहीं है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : रंग मत डारे रे सांवरिया....)

कान्हो कुँज गली में लूक मीचणी खेले घुँघटों काढ़,
सांवरिये ने ढुंढण लागी राधा आख्याँ फाड़ ।। टेर ।।

भेष बदल छेलो रास रचावे जी,
ओढ़ चूनरी बण्यो गूजरी कईयाँ करे पिछाण ।। १ ।।

कान्हुड़े को मुण्डो देखबां ने तरसे जी,
हिवड़े मांही चोखी माची राधा जी के राड़ ।। २ ।।

गूजरियाँ में कईयाँ गोविन्दे ने ढूँढे जी,
काँई जुगत भिड़ावे सोचे के के करे जुगाड़ ।। ३ ।।

मोर पाँख पे ज्युँ निजरां पड़ी जी,
''हर्ष'' पकड़ कर राधा दीन्यों घुँघटियो उघाड़ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा...)

कान्हुड़ा म्हारी बात, ना थारे सै छानी,
जरा निजरां थे, फिराओ म्हारे कानी ।। टेर ।।

शरणागत थारा हां बाबा चरणां मांही बिठा लीज्यो,
टाबरिया थारा हाँ म्हेंतो शरणां में म्हाने लीज्यो,
घड़ी स्यात म्हारी भी सुध लेल्यो बाबा,
दया थारी चावाँ दया दे द्यो दाता,
तरस खाओ म्हापे दया थे दिखाओ,
चरण में पड़्या हाँ गले सै लगाओ,
बिसराओ ना दीन दयालु थारो ही आधार है ।। १ ।।

बालकिया नादान हाँ म्हांसे भूल चूक होती आई,
कालजिये सै कईंया म्हारी भूला ने थे चिपकाई,
घणी खम्मा चांवा धणी माफ कर द्यो,
नजर सीधी बाबा म्हापे थे करल्यो,
बिना थारे बाबा जी ना सकागाँ,
सुख दुख म्हें सारा थांसै कह्वागाँ,
इब तो सारो सेठ सांवरा थांपे दारमदार है ।। २ ।।

थाने ही पूजागां बाबा हरदम थाने ध्यावागाँ,
थारो गेलो छोड़ दयालु और कठे म्हे जावागाँ,
थारो नाम म्हारे होंठा पे आवे,
पलक्यां उघाड़ो दुखड़ा सतावे,
सम्भालो दयालु बेगा सा आओ,
दुखड़ा सुं म्हाने आके बचाओ,
''हर्ष'' थारे हाथां में इबतो म्हारी या पतवार है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरे हाथ में तेरा हाथ हो...)

किरपा का प्रभु, सिर पे हाथ हो,
मेरा साँवरा, मेरे साथ हो,
दीनानाथ ना, फिर कोई फिकर,
जितनी मुश्किलें, आ जाये अगर ।। टेर ।।

श्री चरणों के पास, होगा मेरा वास,
जितने पास फूलों के खुशबु,
चांदनी हो नाथ, ज्युं चन्दा के साथ,
वैसे मेरे संग में रहना तु,
अपना जब कोई, आये ना नजर,
बनके साथी तु, रहना हम सफर ।। दीनानाथ ना ...।।

जरिया तु मेरे, जीने का बना,
जैसे चाहे मुझको तु रखना,
खुशियाँ जो मिले, या हासिल हो गम,
जो भी पाऊँ हँस के है सहना,
कोई राहों का, साथी ना हो गर,
बन के साथी तु, रहना हम सफर ।। दीनानाथ ना ...।।

तेरे नाम से, बीते साँवरे,
मेरे दिन मेरी ये रातें,
जीवन में सदा, तेरी ही रहे,
मेरे इन होठों पे बातें,
''हर्ष'' जो भटकुं, बाबा मैं अगर,
बनके साथी तु रहना हम सफर ।। दीनानाथ ना ...।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तु मिला तो मिली ऐसी जन्नत)

क्या करूँ भेंट तुझको मेरे सांवरे,
मेरा जो कुछ है वो तेरे काबिल नहीं ।। टेर।।

तु है ज्ञानी प्रभु तु है दानी प्रभु,
मैं हुँ मूरख बड़ा अभिमानी प्रभु,
माफ करना मेरे सब करम सांवरे,
तेरे चरणों में झुकने के काबिल नहीं ।। १ ।।

सारे अवगुण मेरे चाहे ले लो अगर,
लो सम्भालो इन्हें ये है तेरी नजर,
जो मेरे पास है वो है अर्पण तुझे,
और कुछ भी मैं देने के काबिल नहीं ।। २ ।।

तू जो इतना करे तूने इतना किया,
कभी मैंने किया ना तेरा शुक्रिया,
नाम तेरा जुबां पे ना आया कभी,
मुँह दिखाने के तुझको मैं काबिल नहीं ।। ३ ।।

तु खरा है बड़ा मैं बुरा हुँ बड़ा,
कामी क्रोधी हुँ कपटी हुँ पापी बड़ा,
''हर्ष'' फिर भी गले से लगाते हो तुम,
तेरी किरपा के बिल्कुल मैं काबिल नहीं ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आपका खत मिला आपका शुक्रिया ...)

क्या से क्या कर दिया सांवरे शुक्रिया,
आपने हाथ सिर पे धरा, शुक्रिया शुक्रिया ।। टेर।।

हम अकेले थे कोई भी संगी न था,
हाल अच्छे न थे हाथ तंगी में था,
रोजगारी न थी काम मंदी में था,
तेरा रहमो करम, तु बना हम कदम,
पाके तुझको प्रभु, भूला सारे मैं गम,
क्या बुरा हाल था, मैं तो बदहाल था,
श्याम तूने मगर, रखी किरपा नजर,
तुही नईया बना, तु खिवैया बना,
तूने लायक मुझे कर दिया ।। शुक्रिया, शुक्रिया...

दिन भी वो श्याम जाते भुलाये नहीं,
मेरे अपने भी कुछ काम आये नहीं,
मुझको ढाढंस कभी वो बंधाये नहीं,
श्याम आये थे तुम, खुशियां लाये थे तुम,
आके मुझको गले, से लगाये थे तुम,
दिन बदल ही गये, हम सम्भल ही गये,
जो ना मैं कर सका, तूने वो कर दिया,
तुही माता मेरी, तु पिता है मेरा,
''हर्ष'' चरणों में तेरे पड़ा ।। शुक्रिया, शुक्रिया...

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : का करूं सजनी आये न बालम..)

क्या करुं सखी री, आयो न कान्हो,
बदरा सी मोरी, बरसे है अंखिया,
आयो न कान्हो ।। टेर ।।

साझं ढली पर आस न छूटी, आजा पंथ निहारुँ,
प्रीत की मारी मैं बेचारी, पल पल नाम पुकारूँ,
छुप छुप रोऊं, नैन भिगोऊं, ''आयो क्युं ना आयो''-२
ढुंढु कहां पे छुप गयो रे सखी री ।।
आयो न कान्हो... ।। १ ।।

तोड़ गयो रे प्रीत की डोरी, जुलमी जुलम कियो रे,
छोड़ अकेली मुझ विरहन को, मेरो श्याम गयो रे,
कुछ ना भावे, याद सतावे, ''आयो क्युं ना आयों''-२
कैसे दिखाऊँ तोहे पीड़ सखी री ।।
आयो न कान्हो... ।। २ ।।

आवन कह गयो अज हुं न आयो, सुध मेरी बिसराई,
मैं दुखियारी श्याम मुरारी, काहे आँख चुराई,
नैना तरसे, सावन बरसे, ''आयो क्युं ना आयों''-२
''हर्ष'' दिवानी भई मैं तो सखी री ।।
आयो न कान्हो... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : महफिल में जल उठी शमां...)

क्याँकी है नाराजी, म्हासुं बोलो तो सरी,
उलझोड़ी गांठ्या ने बाबा, खोलो तो सरी ।। टेर ।।

बेटो रुस्याँ सर जावे जी, मायत रुस्याँ नाहीं सरे,
बालकियां की नादानी ने, मायत दिल पे नाहीं धरे,
म्हें तो हाँ नादान, म्हाने झेलो तो सरी ।। १ ।।

टाबरियो शरणां में आयो, पलक उघाड़ो दीनानाथ,
कइयाँ मुण्डो फेर के बैठ्या, मनड़ो बाबा करल्यो साफ,
म्हाने करद्यो माफ, शरणां लेल्यो तो सरी ।। २ ।।

म्हासुं रुसके कइयां बोलो, चैन सुं थे रह पावोला,
घड़ी स्यात नाराजी पाछे, सिर पे हाथ फिरावोला,
''हर्ष'' दया को हाथ, सिर पे मेलो तो सरी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज ;-सौ बार जनम लेंगे...)

किस बात की चिन्ता है, किस बात का रोना है,
है अटल सत्य प्यारे, होगा वो जो होना है ।। टेर।।

होनी तो तेरी होगी, अनहोनी ना होगी,
दाता पे भरोसा रख, किरपा तुझपे होगी,
सब छोड़के मालिक पे, तुझे चैन से सोना है ।। १ ।।

नाहक चिन्ता करके, हासिल क्या होना है,
वो कैसे मिलें तुझको, तकदीर मे जो ना है,
बिन कारण ही दिल पे, फिर बोझ क्युं ढ़ोना है ।। २ ।।

तु ''हर्ष'' करम किये जा, फल तो ठाकुर देगा,
देने पे जो आयेगा , तुझसे ना सभ्भलेगा
रब के हाथों चाभी, तु सिर्फ खिलोना है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- सताओ ना हमे लोगो हमे दिल की...)

किसी का दिल चुराने को, नजर का वार काफी है,
दयालु ओर क्या मांगु, तेरा दीदार काफी है ।। टेर।।

कोई दर रास ना आये, कोई चोखट नही भाये,
कदम रुकते नहीं मेरे, तेरे दर पे खिंचे आये,
सुकुं मिलता यहीं आकर, तेरा दरबार काफी है ।। १ ।।

कभी कुछ पाने की चाहत, नही लेकर के मैं आता,
तेरी किरपा से ही ठाकुर, मेरा हर काम बन जाता,
जरुरत पूरी करने को, मेरा दातार काफी है ।। २ ।।

लदा फल फूल से कोई, घना इक पेड़ सा तू है,
शरण में ''हर्ष'' तेरी हुँ, भला मुझको फिकर क्युं है,
तेरी छाया में रहता हुँ, तेरा अधार काफी है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मुझे इश्क है तुम्ही से...)

कैसे करूँ तुम्हारा, मैं शुक्रिया बता दे,
उम्मीद से भी ज्यादा, तूने क्युं दिया बता दे ।। टेर।।

जीने को है जरुरी, बख्शी है उतनी दौलत,
बेइन्तहा दयालु, दी है जहाँ में शोहरत,
मशहूर मुझको इतना, तूने क्युं किया बता दे ।। १ ।।

ये कम है क्या कि मुझको, धनवानों में बिठाया,
ज्ञानी जनों के सन्मुख, मुझे मान है दिलाया,
लायक नहीं था जिसके, तूने क्युं दिया बता दे ।। २ ।।

पैसों से पा सकुँ ना, वो चीज मुझको दी है,
पहचान दाता मुझको, तूने भीड़ में भी दी है,
तेरे ''हर्ष'' पे करम ये, तूने क्युँ किया बता दे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

स्वर बद्ध :-अतुल कृष्ण (वृन्दावन)
मो. ७०४४५५९७७०

कुँज बिहारी जी तुम बिन कौन है मेरो,
गिरिवर धारी जी तुम बिन कौन है मेरो ।। टेर।।

फूस को छप्पर है यो जीवन आंधी चले ते यो उड़ जाये,
सूखी रेत को है यो घरोन्धो पैर पड़े ते यो मिट जाये,
कर रखवारी जी तुम बिन कौन है मेरो,
मदन मुरारी जी तुम बिन कौन है मेरो ।। १ ।।

क्षण भंगुर जीवन की कलियाँ नाथ तेरे बिन नांही खिलेगी,
मलायचंल की सांची शीतल खुशबु तुम बिन नांही मिलेगी,
आस तुम्हारी जी तुम बिन कौन है मेरो,
कृष्ण मुरारी जी तुम बिन कौन है मेरो ।। २ ।।

सूखन लाग्यो मुख यो मेरो, अब तो अमृत रस बरसादे,
भव सागर में डूब न जाऊँ ''हर्ष'' खिवैया पार लगादे,
बाँह पसारी जी तुम बिन कौन है मेरो,
बाँके बिहारी जी तुम बिन कौन है मेरो ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घड़ी घड़ी मेरा दिल धड़के...)

घड़ी घड़ी तु क्युँ मुलके, दिल धड़के, मन तरसे,
श्याम सलोने सांवरिया, मटकाओ ना युं पलकें ।। टेर ।।

नैन नशीले होठ रसीले प्यारी सी मुस्कान,
हम तो तेरे कायल हो गये, मनमोहन घनश्याम रे,
मनमोहन घनश्याम,
आँखों से सागर छलके, दिल धड़के, मन तरसे,
श्याम सलोने सांवरिया ...।। १ ।।

तेरी अदायें हमें लुभाये जादूगारे श्याम,
होश हवाश भुलाके बैठे, अब तो आके थाम रे,
अब तो आके थाम,
पीड़ उठे हल्के हल्के, दिल धड़के, मन तरसे,
श्याम सलोने सांवरिया ...।। २ ।।

''हर्ष'' कहो क्या ऐसा तुझमें क्या है ऐसी बात,
मन को मेरे मोह लिया है, जाग उठे जज्बात रे,
जाग उठे जज्बात,
बिरहा के आँसुं ढ़लके, दिल धड़के, मन तरसे,
श्याम सलोने सांवरिया ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चलो रे डोली उठाओ कहार....)

चन्दन से चौक, पुराओ रे आज,
श्याम लला मेरे घर आये,
स्वागत में पलकें बिछाओ रे आज,
श्याम लला मेरे घर आये ।। टेर।।

काले घने घुंघराले बाल, तीखे नयन मोटे से गाल,
मेरे लला की है शान निराली,
बाँकी अदायें तिरछी सी चाल,
केशर का टीका लगाओ रे आज ।। १ ।।

पावन चरण मलमल धुला, किस्मत से ये मौका मिला,
मेरी मुराद आज पूरी हुई,
बाकी रहा ना कोई गिला,
पलकों से झूला झुलाओ रे आज ।। २ ।।

मन मोहिनी सुन्दर छवि, ऐसी छटा देखी नहीं,
चन्दा से मुखड़े पे नूर टपके,
देखे तो शरमा जाये रवि,
लल्ला का लाड लडाओ रे आज ।। ३ ।।

मोर मुकुट सिर पे धरा, चितवन मे ज्युं जादु भरा,
मेरे कन्हैया सा और नहीं है,
''हर्ष'' कहे इन्हें निरखो जरा,
सेवा में खुद को लगाओ रे आज ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : और नहीं कुछ तुमसे कहना ...)

जनम जनम की सेवा देना,
श्री चरणों में तु रख लेना,
मेरे बाबा - ३, साथ में रहना ।। टेर।।

मेरी दुआ का तुझपे असर हो,
हाथ दया का सिरपे धर दो,
सेवक को इतना सा वर दो,
हे करुणाकर किरपा कर दो,
बिन तेरे इक पल ना चैना ।। १ ।।

पलकों से तेरा पंथ बुहारूँ,
आँसु से तेरे चरण पखारूँ,
पल पल तोहे श्याम निहारूँ,
नीन्दों में तेरा नाम पुकारुँ,
याद में निश दिन बरसे नैना ।। २ ।।

एक जनम का क्या है कहना,
अगले जनम भी संग में रहना,
सात जनम तेरा चाकर रहना,
श्याम करुँ सेवा दिन - रैना,
''हर्ष'' भगत का ये ही कहना ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जनम जनम का साथ है निभाने को ...)

जनम जनम का दास हुँ तुम्हारा मैं,
तेरा था तेरा रहुँगा मैं ।। टेर ।।

प्रेम अनूठा है अपना प्रेम का जग में मोल बड़ा -२
प्रेम पुजारी हुँ तेरा, देख तेरे चरणों में पड़ा ।। १ ।।

दर का तेरे चाकर हुँ, मेरी तो पहचान यही -२
मेरी सेवा से ठाकुर, तु भी तो अनजान नहीं ।। २ ।।

श्याम तेरा इस बेटे पर, इतना सा अहसान रहे -२
जितना ऊँचा चढ़ जाऊँ, बिल्कुल ना अभिमान रहे ।। ३ ।।

तुही मेरी मंजिल है, हरदम दर पे आऊँगा -२
''हर्ष'' भरोसा है मुझको, इक दिन तुझको पाऊँगा ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : पन्ना की तमन्ना है कि हीरा ...)

जब से दयालु तेरी शरण में मैं आया,
दर पे तुम्हारे मैंने, जो भी चाहा वो पाया ।। टेर।।

मेरे तो सारे गम मेरे श्याम ने हर लिये,
आँखों में सुखभरे सपने ही भर दिये,
चरणों की मिली धूल, खिल उठा मन का फूल,
कहीं ना सहारा मिला हार के जब आया ।। १ ।।

जहाँ में धोखे ही देते हैं लोग हर बार,
साँचा बस तेरा है झूठा है जग का प्यार,
रिश्तों को छोड़के, नातों को तोड़के,
दुनिया भुलाके तेरे चरणों में जब आया ।। २ ।।

तू ना जो होता तो ''हर्ष'' बता मेरे श्याम,
दीनों के कैसे फिर पल में बनते काम,
लेता हुँ तेरा नाम, पाता हुँ मैं आराम,
गलियों में तेरी जब खुद को ही मैंने लुटाया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : हारे-हारे-हारे.हम तो दिल से हारे ...)

जब जब जीवन नैया मेरी भटकती है,
हसरत से ये आँखे तुझको तकती है,
मुश्किल की घडियों में कोई न आये,
नंगे पैरों आता तुहीSSS
नैया का खिवैया-बन जाये तु कन्हैया ।। टेर ।।

तू जो करे, ना करता कोई, दामन मेरा, ना भरता कोई,
दुख की घड़ी में, आके प्रभु, दुखड़े मेरे, ना हरता कोई,
तुमसा ना दूजा कोई सांवरे ।।
नैया का ....।। १ ।।

लागुं तेरा, क्या मैं बता, किसने दिया, तुझे मेरा पता,
लायक नहीं था, मैं तो तेरे, बख्शी हैं क्यु, तूने मेरी खता,
तुमसा ना दानी कोई सांवरे।।
नैया का ....।। २ ।।

तारणतरण, तुही तो है, करुणाकरण, तुही तो है,
''हर्ष'' कहे, हम दीनों की, साँची शरण, तु ही तो है,
तेरा ना सानी कोई सांवरे।।
नैया का ....।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जब दीप जले आना...)

जब ज्योत जले कान्हा, दातार चले आना,
संदेश प्रेम का दे जाना, मेरा मान बढ़ा जाना ।। टेर ।।

मैं पलकें पंथ निहारुँगा, तेरी नजर उतारूँगा,
मैं नैनों के इस सागर से, तेरे चरण पखारूँगा,
जब प्रेम के मोती मेरी इन, आँखों से ढ़ले आना ।। १ ।।

यहाँ कोई गली ना कूचा है, तेरा नाम जहाँ ना गूंजा है,
तुमसा ना दयालु और कोई, मैंने तो तुम्हे ही पूजा है,
शबरी के गये थे आज उन्हीं, भावों से चले आना ।। २ ।।

मैं जितने जन्म प्रभु पाऊँ, तेरा ना कर्ज चुका पाऊँ,
इक बार मुझे दर्शन दे दो, तेरे दम पे मैं तर जाऊँ,
तेरे ''हर्ष'' का जीवन धन्य बने, कान्हा तु चले आना ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : दिल दिवाना हो गया...)

जिन्दगी छोटी मिली है,
खुश रहो हर हाल में ।। टेर ।।

जो हुआ हासिल उसी में, मस्त हो अलमस्त हो,
बंदे उतना ही मिलेगा, जो लिखा है भाल में ।। १ ।।

खुशियों में हर पल बिताना, जिन्दगी का नाम है,
खुलके हँस ले आज प्यारे, क्या पड़ा जजाँल में ।। २ ।।

साँसो की सरगम पे रब के, नाम की माला जपो,
क्या पता प्रभु दे दिखाई, साँसो की सुरताल में ।। ३ ।।

बीता कल तो जा चुका है, ''हर्ष'' यादें है बची,
आने वाला कल छुपा है, वक्त के ही काल में ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(स्वर बद्ध! - श्री प्रवीन बेदी)

जिसने भी श्याम देखा, वो ही भटक गया है,
मुस्कान देख तेरी, शीशा चटक गया है ।। टेर ।।

सागर सी नीली आँखें, गहराई कौन नापे,
हो डूबने की चाहत, बंदा वो इनमें झाँके,
जिसने नजर मिलाई, उसको गटक गया है ।। १ ।।

फैली है चान्दनी ज्युं, चन्दा चमक रहा है,
मुखड़े पे तेज मानो, सूरज दमक रहा है,
तुझे देखके निवाला, मुंह में अटक गया है ।। २ ।।

जादू भरी ये चितवन, चितचोर सांवरे की,
डोले है मन की कश्ति, इस ''हर्ष'' बावरे की,
दिल ये अधर में छलिये, मेरा लटक गया है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जिन्दगी की तलाश में हम ...)

जीतने की उम्मीद में मैं, साँवरे तेरे पास आ गया,
कोशिशें करके मैं थक गया, आ गया हार कर आ गया ।। टेर ।।

गम की आँधी चली जोर की, तिनके तिनके को लेके उड़ी,
दुख के बादल बरसने लगे, ''लागी जीवन में मेरे झड़ी-२''
मैंने माँगी थी खुशियाँ मगर, मेरे हिस्से में गम आ गया ।। १ ।।

जीती बाजी मैं हारा सदा, पाशा हरदम ही उलटा पड़ा,
मेरी हस्ति उजड़ती रही, ''देखता ही रहा मैं खड़ा-२''
अपनी किस्मत को देखा तो मैं, अपने आप से शरमा गया ।। २ ।।

कुछ ना सूझा मुझे तो प्रभु, चलके तेरी शरण आ गया,
पीछे मुड़के ना देखा कभी, ''जीने का जरिया मैं पा गया - २''
जीत पक्की है ''हर्ष'' मेरी, मन में विश्वास ये आ गया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बोलो जी दयालु दिलदार ...)

जीमों जी बाबा जी मनवार मैं करूं,
चूरमे की थाली थारे सामने धरूं ।। टेर ।।

आटे मांही देसी घी को, मूण दियो,
हाथां सु मसल आटो, गूंथ लियो,
उँखल माही कूट ल्यायो, जीमो तो सरु ।। १ ।।

चूरमे में देसी बूरा, दीन्हीं मैं मिला,
कतर कतर मेवा, मायने दिया,
भोग थे लगाओ, अरदास मैं करूँ ।। २ ।।

छोटोड़ी इलायची का, दाणा घाल्या माय,
मुट्ठी भर केसर बुरकाई, चूरमे के माय,
जीमो जी महाराज थारे, चरणां में पड्डुं ।। ३ ।।

पड़दो लगायो बाबा, आओ तो सरी,
रूच-रूच भोग थे, लगाओ तो सरी,
''हर्ष'' दयालु थांसु, अरज करूँ ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : देता हरदम सांवरे...)

जैसे जैसे दरपे तेरे, झुकता चला गया,
वैसे वैसे मैं तो ऊँचा उठता चला गया ।। टेर ।।

देर से समझा तुझे ये भूल मेरी है,
साँवरे माथे पे अब तो धूल तेरी है,
जैसे जैसे भजनों में मैं रमता चला गया ।। १ ।।

मान लुँ कैसे तुझे परवाह नहीं मेरी,
इतना दिया तूने मुझे ये है दया तेरी,
जैसे जैसे हारे के संग चलता चला गया ।। २ ।।

हर मुसीबत में तुझे हाजिर सदा पाया,
हर खुशी में ''हर्ष'' ने शामिल सदा पाया,
जैसे जैसे श्री चरणों में गिरता चला गया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जो मेरी रुह को चैन दे प्यार दे....)

जो मेरे दर्द को, मेट दे साँवरे,
वो दवा, बन गये हो तुम
खैर ख्वाह, बन गये हो तुम ।। टेर ।।

घाव दिल के मेरे, तु मिटाता रहा,
हर गुनाह से मुझे, तु बचाता रहा,
रोते लब को मेरे, जो सुकुं दे सके,
वो हँसी बन गये हो तुम ।। १ ।।

हर किसी को कभी, मैं बताता नहीं,
राज तुमसे कभी, मैं छुपाता नहीं,
मन को शीतल करे, सींच के जो सदा,
वो नमी बन गये हो तुम ।। २ ।।

''हर्ष'' की जिन्दगी, तो रुआँसी रही,
प्यार की चाह में, रूह प्यासी रही,
जिस खुशी के लिये, मैं तरसता रहा,
वो खुशी बन गये हो तुम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आ जाओ तड़पते हैं अरमां...)

जो थे ही दयालु बिसराओ, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी,
क्युँ फेर के मुण्डो बैठ्या हो, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी ।।

म्हारा सगला जतन बेकार गया, दुखड़ां सुं लड़ कर ''हार गया''-२
गिरतां को हाथ पकड़ ल्यो जी, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी ।।१ ।।

म्हारे मन की बताद्यो कुण पूछे, दातार किनारो ''ना सूझे''-२
म्हारी नाव किनारे ल्याओ जी, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी ।।२ ।।

म्हारो बांध सबर को टूट गयो, हर एक सहारो ''छूट गयो''-२
जो थे भी सहारो ना देवो, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी ।। ३ ।।

इब थांपे है दारमदार धणी, थारे हर्ष ने करद्यो ''पार धणी''-२
म्हारी लुटती लाज बचासी कुण, म्हाने श्याम सहारो कुण देसी ।।४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जग रुठे मेरा सांवरिया...)

झूठे रिश्तेदारों का व्यवहार है झूठा,
मतलब के रिश्तो का ये संसार है झूठा ।। टेर ।।

अच्छे दिन में मुझको बाबा, बेगाने अपना कहते थे,
हम सफर बने वो राहो के, ''हमदर्द वो बनके रहते थे''-२
देर से समझा उनका वो सरोकार है झूठा ।। १ ।।

जब वक्त बुरा आया था तो, रिश्तों की तब पहचान हुई,
अपना जिसको जाना था वो, ''दुनिया मुझसे अनजान हुई ''-२
सिर्फ दिखावा था उनका वो प्यार है झूठा ।। २ ।।

जिस घड़ी तेरे दर पे आया, उस घड़ी मुझे ये भान हुआ,
ब्रह्माण्ड में सच्चा तूही है, ''तेरे ''हर्ष'' को इतना ज्ञान हुआ''-२
सच्चा साथी तू ही है हर यार है झूठा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- ऐरी मस्ती कंहा मिलेगी...)

ठुमक ठुमक कर नाचो सारे ठुमके खूब लगाओ,
श्याम धणी को रिझाओ ।
हाथ पकड़ कर इक दूजे का नाचो और नचाओ,
श्याम धणी को रिझाओ ।। टेर।।

किर्तन में खाटु से चलकर श्याम सलोनें आये,
आओ इनको अपनी खुशियां नाच नाच दिखलाये,
स्वागत मे श्री श्याम प्रभु के चरणों में बिछ जाओ ।। १ ।।

मोर छड़ी धारी के सोहे मस्तक तिलक निराला,
मंद मदं मुस्काये मेरा बाबा खाटु वाला,
खुशबु का शोकिन है इनको अंतर से महकाओ ।। २ ।।

उदय हुऐ हैं भाग्य हमारे ठाकुर आज पधारे,
''हर्ष ''कहे रे हम भगतों के हो गये वारे न्यारे,
लीले वाले श्याम का भगतो मिलके लाड लड़ाओ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : दिल विल प्यार वार मैं क्या जानु रे ..)

दोहा : जलवे तुम्हारे कान्हां, हमें बेकरार करते ।
कैसे बतायें तुझको, हम कितना प्यार करते ।।

तुझको सांवरे अपना जानुं रे,
मानुं तो मानुं बस इतना कि मैं तुझे
अपना मानु रे ।। टेर ।।

तुमसा नहीं है कोई, जग में महान है तु,
भगतों के दिल की धड़कन, भगतों की जान है तु,
बिन बोले ही - २, समझो बाबा,
सेवक के जज्बात रे ।।
तुझको सांवरे ....।। १ ।।

तेरी दया मैं ठाकुर, शब्दों में कह सकुं ना,
तेरे बिना ऐ मोहन, इक पल भी रह सकुं ना,
अपना बाबा-२, बंधन ऐसा,
नदिया संग ज्युं नाव रे।।
तुझको सांवरे ....।। २ ।।

दिल चीर के दिखादुं, तु अगर कहे तो दाता,
क्युं तुझको श्याम मेरे, तेरा ''हर्ष'' इतना चाहता,
मैं हुँ तेरा-२, तु है मेरा,
रखना सिर पे हाथ रे ।।
तुझको सांवरे ....।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुम्हे अपना बनाने की कसम...)

तेरे चरणों में रहने की कसम ''खाई है''-२
तेरी राहें पे चलने की कसम ''खाई है''-२ ।। टेर ।।

समूची जिन्दगी, दरपे बिताऊँगा,
आखरी साँस तक, गुणगान गाऊँगा,
तेरी महिमा प्रभु मैंने सदा गाई है ।। १ ।।

मेरे होठों पे है, हरदम तेरी बातें,
मेरे सीने में है, हरपल तेरी यादें,
तेरी चाहत मेरे दाता ये रंग लाई है ।। २ ।।

तेरा ये ''हर्ष'' तो, कुछ ना सिवा तेरे,
गुनाह सब माफ हो, बाबा सदा मेरे,
तेरी चौखट पे जीवन की खुशी पाई है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तेन्नु कितना मैं प्यार करां...)

तेरे चरणों से प्यार करुँ, तेरे सदके सौ बार करुँ,
तु आयेगा लीले चढ़ के, सांवरे इंतजार करुँ,
कि तेरे बिन सूना सूना लगे, मेरी ये आँख रस्ता तके,
मैं तुझको दिल से पूजता हुँ, तु इतना जान ले जरा ।। टेर ।।

कुछ भी नहीं है बिन तेरे तु, तु ही तो है मेरी जिन्दगी,
सब कुछ हो कान्हा तुम मेरे, तु ही तो है बन्दगी,
मैं तेरे बिन रह ना पाऊँगा, ना होना कभी मुझसे तु जुदा ।।
मैं तुझको दिल से पूजता...।। १।।

बेटे की है ये आरजु कि, चौखट से तेरी ना हटुं,
नीन्दों में ध्याऊँ मैं तुझे, ख्वाबों में तुझको ही भजुं,
मैं तुझको भूल पाऊँ ना, दिवाना मोहे करती ये अदा ।।
मैं तुझको दिल से पूजता...।। २ ।।

नादानियाँ भी गर करुँ ना, करना कभी भी तु गिला,
वंदन हमेशा ही करुँ ना, टूटे कभी भी सिलसिला,
मैं युँही हर्ष ध्याँऊगा, हुआ हुँ अब तुझपे मैं फिदा ।।
मैं तुझको दिल से पूजता...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जो भी कसमें खाई थी हमने...)

तेरे दरपे आया मैं जब से, तूने ही थामा है तबसे,
चरणों में तेरे जो पाया था मैंने बसेरा,
वो मुझे याद है, हाँ मुझे याद है।
मैं तो प्रभु गरीब था, अच्छा मेरा नसीब था
चरणों में तेरे जो पाया था मैंने बसेरा
वो मुझे याद है, हाँ मुझे याद है ।। टेर ।।

मारा मारा फिरता था, मैं तो रोया करता था, मिलने से पहले तुम्हारे,
कोई न सहारा था, कोई ना हमारा था, फाकों में दिन वो गुजारे,
किस्सा मेरा अजीब था, मुझ जैसे बदनसीब का,
तूने ही पल में मिटाया था मेरा अंधेरा
वो मुझे याद है, हाँ मुझे याद है ।। १ ।।

मेरे जज्बातों को, मेरे हालातों को, तुमने ही समझा था बाबा,
महर खजाना वो, प्रेम पुराना वो, तुमने लुटाया था दाता,
मेरे गमों को दूर कर, दुखड़ों को चकनाचूर कर,
तूने बनाया था बिगड़ा मुकद्दर ये मेरा,
वो मुझे याद है, हाँ, मुझे याद है ।। २ ।।

तेरे उपकारों ने, तेरे आधारो ने, मुझको दिवाना बनाया,
वक्त के धारों ने, तेरे संस्कारो ने, ''हर्ष'' को जीना सिखाया,
बाबा मैं खुश नसीब था, तु जो मेरे करीब था,
तुमसे ही मैंने तो जीवन में पाया सवेरा,
वो मुझे याद है, हाँ मुझे याद है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जग घुमेया तेरे जैसा ना कोई ....)

तेरी मुस्कां ये प्यारी प्यारी,
तेरी अंखिया ये जादुगारी, तेरी बाँकी टेढ़ी चितवन,
तेरे जलवों पे जाऊँ वारी, चंचल नदि सा तु कान्हा ऽऽऽऽ
रंग रसिया तेरे जैसा ना कोई,
मन बसिया तेरे जैसा ना कोई ।। टेर ।।

चमचमाती धूप में ज्युं खिलता गुलाब तु,
सुबह का सुहाना प्यारे है हसीन ख्वाब तु,
शीतल करे है जैसे चन्दा की चान्दनी तु,
मन को जो छेड़ती है वीणा की रागिनी तु,
सुन मुरली की ताने तेरी,
मैंने सुध ही भुलाई मेरी,
तेरे जलवे अनोखे ऐसे,
तुने निन्दिया चुराई मेरी,
चंचल नदी सा तु कान्हा ऽऽऽऽ
रंग रसिया तेरे जैसा ना कोई,
मन बसिया तेरे जैसा ना कोई ।। १ ।।

- २ -

रेशम की डोर है तु हवाओं का शोर तु,
मस्त होके नाचता जो जंगल का मोर तु,
रस भरे होंठ तेरे रस की फुहार तु,
स्वाति की बून्द है तु बागों में बहार तु,
तु है रूप का खजाना प्यारे,
तेरा जग है दिवाना प्यारे,
तुझे देखने का ढुंढता है,
तेरा ''हर्ष'' बहाना प्यारे,
चंचल नदी सा तु कान्हा ऽऽऽऽ
रंग रसिया तेरे जैसा ना कोई,
मन बसिया तेरे जैसा ना कोई ।। २ ।।

शहद सा मीठा और फूल सा सुन्दर ।
कैसे बंया करुँ क्या नहीं तेरे अन्दर ।।
धरती का कागज समन्दर की स्याही ।
तेरे रूप का वर्णन कान्हा ना कर पाई ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : नित खैर मंगा सोणियो मैं तेरी...)

तेरे द्वार का हुँ सांवरे भिखारी,
दया का तेरा हाथ रखना,
तेरे चरणों का मैं हुँ पुजारी,
दया का तेरा हाथ रखना ।। टेर।।

तेरे नाम पे है लिखदी ये जिन्दगी,
तेरी सांवरे करूँ मैं अब बन्दगी,
तेरे हाथों अब डोर ये हमारी ।। १ ।।

कभी मुझसे तु नाता नहीं तोड़ना,
कभी मुझको अकेला नहीं छोड़ना,
कभी फेरना ना आँख ये तुम्हारी ।। २ ।।

मेरी प्रार्थना कबूल कर सांवरे,
तेरा ''हर्ष'' जपे है तेरा नाम रे,
मैं तो जानुं तु है लख-दातारी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : थारी महिमा अपरम्पार दादी आई थारे द्वार)

थारो साँचो है दरबार म्हारा सांवरिया सरकार,
थारे होतां कइयां दुखड़ा पाऊँ बाबाजी,
ओ म्हारा बाबाजी ।। टेर ।।

मेरी लाज बचाल्यो थारे चरणां अर्ज लगाई,
बदनामी को दाग न लागे ''लोग करेगा हंसाई''-२
पाछे बिन मारयां ही मैं मर जाऊँ बाबा जी,
ओ म्हारा बाबा जी ।। १ ।।

आस भरी आंख्याँ सुं बाबा देखुं थारे कानी,
मेरे मन की पीड़ दयालु ''थांसु कोन्या छानी''-२
सै क्युं जाणों थाने काईं बताऊँ बाबा जी,
ओ म्हारा बाबा जी ।। २ ।।

विपदा की घड़ियां में बेटो पिता के स्यामी रोवे,
टाबरिये पर भीड़ पड़े तो ''मायत कइयां सोवे''-२
थाने ''हर्ष'' कालजो चीर दिखाऊं बाबा जी,
ओ म्हारा बाबा जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : घर आया मेरा परदेशी ...)

थे ना सुणो तो कुण सुणसी,
थां बिन दुखड़ा कुण हरसी ।। टेर ।।

किरपा खाटु श्याम करो,
चिन्ता म्हारी आय हरो,
थे ना हरो तो कुण हरसी ।। १ ।।

टेर सुणो इब आ जाओ,
सिर पे हाथ फिरा जाओ,
थे ना धरो तो कुण धरसी ।। २ ।।

नाम बड़ो थारो काम बड़ो,
शरणां में थारे श्याम पड़यो,
थे ना भरो झोली कुण भरसी ।। ३ ।।

''हर्ष'' दया करतार करो,
मझधारां सुं पार करो,
थे ना करो तो कुण करसी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तेरी बिन्दिया रे....)

थे ही सुणस्यो जी दयालु थे ही सुणस्यो जी,
मेरा दुखड़ा कान्हुड़ा थे ही हरस्यो,
ओ बाबा थे ही हरस्यो जी ।। टेर।।

घणी आशा लेकर बाबा, शरणां थारी आयो,
दुनिया तो बिसराई मन्ने, थे तो ना बिसरायो,
झोली मेरी - २, दूजो ना - ३, थे ही भरस्यो,
ओ बाबा थे ही भरस्यो जी ।। १ ।।

थारे होतां बेटो थारो, दुखड़ा कइयां पावे,
मेरी गई तो लाज बाबा, थारी भी तो जावे,
मेरे सिरपे - २, हाथ थारो - ३, थे ही धरस्यो,
ओ बाबा थे ही धरस्यो जी ।। २ ।।

''हर्ष'' थारो जाणे बाबा, होसी किरपा थारी,
हार्योड़ा का नाथ हो थे, थाँपे भरोसो भारी,
दया म्हापे - २, सांवरिया - ३, थे ही करस्यो,
ओ बाबा थे ही करस्यो जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढुढुं रे...)

दामन खाली झोली खाली, खाली है गगरिया,
आँखों में दो आंसु लेकर, आया रे सांवरिया ।। टेर।।

दीन दुखी निर्बल से बाबा, ''करता तुही प्यार है ''-२
हार गया गर सेवक तेरा ''ये तो तेरी हार है''-२
तेरे होते लुट ना जाये, इज्जत की गठरिया ।। १ ।।

कल क्या होगा इस चिन्ता में ''सोऊं ना मैं रात में''-२
इज्जत से जीवन मैं जी लुं ''इतना भी ना हाथ में''-२
इस हालत में जाने कैसे, बीतेगी उमरिया ।। २ ।।

आशायें सब टूट चुकी है, ''आया हुँ मैं हार के''-२
हाथों में है लाज ये मेरी - ''अब तो लखदातार के''-२
''हर्ष'' पड़ा चरणों में तेरे, लेले रे खबरिया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- बोल मेरे साथिया...)

देख मेरा सांवरा कितना दयावान है,
थाम के उँगली राह दिखाये,
हर आफत से मुझे बचाये,
कितना मेहरबान है ।। टेर।।

बांध लिया ये बंधन ऐसा मेरे श्याम ने,
महक उठा ये मधुवन सांवरिये के नाम से,
सभी मुरादें पूरी करता ध्यान हमारा रखता,
कुछ भी बदले ये ना बदले इतना ही अरमान है ।। १ ।।

बदला है किस्मत को हाथ फिरा के सांवरे,
जीवन भर पीऊँगा मैं धो धो तेरे पांव रे,
आँधी आई आफत वाली हरी रही ये डाली,
जीवन की बगिया का अब तो ये ही बागवान है ।। २ ।।

थाम लिया हाथों को कितना उपकार है,
हुकम करो ''हर्ष'' तेरा अबतो ताबेदार है,
श्री चरणों मे रहे ठिकाना इतनी प्रीत निभाना,
नाम से तेरे इस दुनिया में मेरी तो पहचान है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : नजर के सामने जिगर के पास...)

नजर उठा जरा तुम्हारे पास,
कोई आया है मेरे श्याम ।। टेर ।।

बेचैनी सी रहती है, झाँको मेरे मन में,
खोया खोया रहता हुँ, जाने किस दुनिया में,
चैन पाऊँ नहीं, एक पल भी जरा ।। १ ।।

कह ना पाऊँ मैं दिल की, हालत ये कैसी,
आँखे मेरी पढ़ ले तु, देख मेरी मायुसी,
दिल में दर्द भरा, देख ले तु जरा ।। २ ।।

ठोकर कितनी खाई है, मैंने तो दर दर की,
याचक पे कब दातारी, होगी महर नजर की,
''हर्ष'' बाहें मेरी, श्याम थामो जरा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे ...)

ना करता कोई ना करेगा कोई,
ना देता कोई ना ही देगा कोई,
करले भरोसा मेरे श्याम पे,
हमेशा किया है हमेशा करेगा, हमारे लिये ।। टेर ।।

जमाने से उम्मीद कुछ ना करो, जरुरत पे कोई न काम आयेगा,
विश्वास गर है तेरे हाथों को, पकड़ने मगर मेरा श्याम आयेगा,
अपने तेरे मुँह चुरायेंगें रे, जरुरत पे चेहरा छुपायेगें रे ।।
करले भरोसा...।। १ ।।

कभी जग में आँसु बहाना नहीं, तेरे आँसुओं पे हँसेगा जहाँ,
फसाना सुनेगा ना तेरा कोई, भला किसको जाके कहेगा कहाँ,
रोते हुए पे ये दुनिया हँसे, मजबूर प्राणी की परवाह किसे ।।
करले भरोसा ...।। २ ।।

तेरे दुख में शामिल न होगा कोई, खुशी में तेरे साथ होगें सदा,
हमराह बनके जो संग में चले, वो विपदा की घड़ियों में होगें जुदा,
अरे ''हर्ष'' दुनिया की ये रीत है, हारे को मिलती यँही जीत है ।।
करले भरोसा ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तु प्यार का सागर है ...)

प्रभु ब्याज चुका ना सकुं, मूल कैसे मैं चुकाऊँगां,
करजा जो लिया तुमसे, मैं वापस दे ना पाऊँगा ।। टेर।।

जग से मांगा, कुछ भी मिला ना, इज्जत निलाम हुई,
आखिर तेरे, दर पे आया, ''झोली यँही पे भरी - २''
लौटा ना सकुं तुझको, कैसे मुखड़ा दिखलाऊँगा ।। १ ।।

लायक बना दे, इतना मुझको, शान से जीवन जिऊँ,
हारे के साथी, तेरे अलावा, ''और कहीं ना झुकुं-२''
अब तेरे सिवा दानी, कहीं मैं और न जाऊँगा ।। २ ।।

हँसके तु देता, हमको खुशी से, कहता किसी से नहीं,
देकर दयालु, हमको हमेशा, ''वापस ना लेता कभी-२''
कहे ''हर्ष'' तेरे जैसा, सेठ कहाँ और मैं पाऊँगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जग रुठे मेरा सांवरियाँ सरकार ना रुठे...)

फर्क बड़ा है प्रेमी और राजा में कान्हा,
सुनो द्वारिकाधीश बताये तेरी राधा ।। टेर।।

गोकुल का कान्हा प्रेमी था, जो प्रेम में हँसके मिट जाता,
औरों को मिटाकर राज करे, ''अब वो ही राजा कहलाता - २''
प्रेम की भाषा क्या समझे - जानेगा राजा ।। १ ।।

यमुना का मीठा पानी भी, तुझको तो रास नहीं आया,
सागर के किनारे आ पहुँचा, ''खारा पानी हिस्से आया - २''
तुम भूल गये हम तुमको ना भूले है कान्हा ।। २ ।।

जिस उंगली पे मुरली सजती, अब चक्र सुदर्शन सजता है,
प्रेमी तो रक्षक होता है, ''राजा महाभारत रचता है -२''
युद्ध ही भाये प्रेम उसे बिल्कुल ना भाता ।। ३ ।।

मैं प्रेम पुजारन हुँ प्यारे, मेरी तो बस पहचान यही,
तुमने गीता सा ग्रंथ दिया, ''जिसमें मेरा कहीं नाम नहीं - २''
मगर समापन पे जग राधे-राधे गाता ।। ४ ।।

वो छवि द्वारिकाधीश की तुम, बस ढूंढते ही रह जाओगे,
हर मंदिर में तुम खड़े प्रिय, ''मेरे साथ नजर ही आओगे-२''
''हर्ष'' प्रेम ही दुनिया में है पूजा जाता ।। ५ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- मन म्हारो लाग्यो जी नाथ...)

बस गयो तिरलोकी नाथ म्हारी धड़कन में,
कैसो जादु है नाथ थारी चितवन में ।। टेर।।

हे मुरलीधर बाँके बिहारी, बाँके बिहारी मेरे कुँज बिहारी,
मुरली सोवे थारे अधरन पे ।। १ ।।

हे केशव हे मदन मुरारी, मदन मुरारी मेरे श्याम बिहारी,
रम जाऊँ थारी मुस्कन में ।। २ ।।

हे गोपेश्वर हे नट नागर, हे नट नागर मेरे करुणा सागर,
मन लाग्यो थारे चरणन में ।। ३ ।।

हे जगदीश्वर आदि अनन्ता, पारब्रह्म हे सच्चिदानन्दा,
''हर्ष'' पड़्यो थारी शरणन में ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- मुझे प्यार की जिन्दगी...)

बहुत सह लिया अब सम्भालो दयालु,
गर्दिश से मुझको निकालो दयालु ।। टेर ।।

घुट घुट के आसुँ पीता रहा हुँ,
मर मर के जीवन जीता रहा हुँ,
दुख के भवँर से निकालो दयालु ।। १ ।।

शरण मे हुँ तेरी इतना सा कर दे,
जरा हाथ मेरे सिर पे तु धर दे,
विपदा से मुझको बचालो दयालु ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे ज्यादा क्या मांगा मैंने,
जो सबको दिया है वही चाहा मैंने,
मेरी झोली मे भिक्षा डालो दयालु ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : दीनानाथ मेरा बात ...)

बाबा श्याम दूजो काम मैं तो कोन्या जाणु जी,
थाने ही मैं जाणु बाबा थाने ही पिछाणु जी ।। टेर।।

भजन मैं गाऊँ थारा दुनिया में डोलु हुँ,
मेरा तो रुखाला थे हो चोड़े धाड़े बोलु हुँ,
गाडली थे हाँको मेरी मैं तो याही मानुं जी ।। १ ।।

काम धन्धो नाहीं कोई नाहीं कारोबार है,
थारी ही दया सुं चाले मेरो परिवार है,
थारो दर छोड़ बाबा खाक कोन्या छाणु जी ।। २ ।।

खरचो थे भेज देवो भूखो ना कदे रहुँ,
थारे सुं छिपावुं कोन्या दुनिया सुं ना कहुँ,
थारे होतां चिन्ता क्याँकी ''हर्ष'' मैं जाणुँ जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुमसे जुदा होकर...)

बाबा जरा कहदे, पूछे ये दिवाना,
काहे बता मुझको, समझा है बेगाना,
सांवरे, क्या मैं तेरा कुछ नहीं - २ ।। टेर ।।

रूतबा बड़ा ठाकुर, ब्रह्माण्ड में तेरा,
लेकिन जरा सोचो, प्रेमी हूँ मैं तेरा,
अपने प्रेमी को क्युं, तूने ना पहचाना ।। १ ।।

मुझे गैर समझा है, नजरें चुराते हो,
मुझसे भला क्युं ना, आँखें मिलाते हो,
तुझको सदा मैंने, अपना यहां माना ।। २ ।।

मैं दीन हुँ लेकिन, तु दीन का दाता,
तु ''हर्ष'' दातारी, दीनों को अपनाता,
मैं तेरा सुदामा हुँ, तु मेरा है कान्हा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : उस दिन मुझको भूल न जाना..)

बाबा मुझको भूल न जाना, भूल अगर कोई हो जाये,
श्री चरणों से दूर न करना, जीते जी बेटा मर जाये ।।

मेरा सहारा प्यार है तेरा, जीने का जरिया है मेरा,
अंधियारी रातों में मेरी, बनके आया तुही सवेरा,
ये तो सच है तुम बिन बाबा और कोई ना मुझको भाये ।। १ ।।

जबसे तेरी शरण में आया, तबसे मुझको ये लगता है,
तपती धूप में ऐसे मिले ज्युँ, प्यासे को सावन मिलता है,
स्वाति की बून्दों से जैसे सीप में इक मोती बन जाये ।। २ ।।

अनजाने को अपना बनाना, श्याम तेरा अन्दाज पुराना,
तेरे इस अन्दाज का बाबा, ''हर्ष'' हुआ है आज दिवाना,
एक दफा जो शरण में आये, तेरा ही होकर रह जाये ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बहारो फूल बरसाओ....)

बिछा दो आज पलकों को ''मेरे भगवान आये हैं''- २
मेरी कुटिया में बनके वो,
''मेरे मेहमान आये है'' -२।। टेर ।।

वो देखो, चान्द सी शीतल, मेरे सरकार की चितवन,
ऐसा लागे, मानो महके, मेरे दिलदार का उपवन,
हुआ गुलजार ये आंगन, मेरे भगवान आये है ।। १ ।।

सुनाओ, गीत मंगल के, है ये गुणगान की बेला,
जमाने, भर के भक्तों का, लगा देखो यहाँ मेला,
नहला दो भाव से इनको, मेरे भगवान आये हैं ।। २ ।।

ना रहे, कोई कमी भी, ऐसा सत्कार हो जाये,
भूले ना, ''हर्ष'' सांवरिया, ऐसा सम्मान हो जाये,
विदुर के साग खाने को, मेरे भगवान आये है।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ई तो महिमा राम की ईमा हमरा का कसूर है...)

बिन बोल्यां सब काम बणावे ऐसो लखदातार है,
ऐसो जादुगारो म्हारो लीले को सवार है ।। टेर।।

धंधो मेरो मंदो थो और, मैं तो बिल्कुल बेलो थो,
संगी साथी कोई ना था, बैठयो निपट अकेलो थो,
श्याम धणी की किरपा सुं, इब सागे यो संसार है ।। १ ।।

पकड़ लिया मैं पैर श्याम का, बाबो हाथ पकड़ लीन्हो,
जीवन गाड़ी चाल पड़ी और, पो बारा यो कर दीन्हो,
धरती सुं आकाश बिठायो, भोत घणो उपकार है ।। २ ।।

''हर्ष'' करे इब ऐंकी चाकरी, ऐकां ही गुण गावे है,
दुखड़ा आणे के पहल्याँ ही, इने हाजिर पावे है,
ऐकें दम पर चाले इब तो, म्हारो यो घरबार है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बाबा तकदीर मेरी...)

बीच मझधार हाथों, छूटी पतवार बाबा,
डूब जाये ना नैया, श्याम जल्दी से आजा ।। टेर ।।

हाथ कमजोर मेरे, कैसे नैया चलाऊँ,
थक गया हुँ दयालु, आजा तुझको बुलाऊँ,
या मुझे पार कर दे, या तरीका बता जा ।। १ ।।

एक विश्वास तुझपे, मैंने हरदम किया है,
मुसीबत के समय में, श्याम हाजिर हुआ है,
उस भरोसे की बाबा, आके इज्जत बचा जा ।। २ ।।

भक्त के वास्ते तु, नंगे पैरों ही आता,
''हर्ष'' पूछे बता दे, काहे देरी लगाता,
भक्त-भगवान का वो, प्यारा रिश्ता निभा जा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : म्हापे जद भी मुसीबत...)

बैठ्यो कागलो मुण्डेर ऊपर, आज चढ़के,
होसी चोखो सो सुगण, दांई आँख फड़के ।। टेर ।।

काँव काँव करके बतलावे,
आज पावणो घर म्हारे आवे,
आसी सांवरो सलुणो म्हारो, हियो हरखे ।। १ ।।

चन्दन सुं म्हे चौक पुरायो,
चान्दी को पाटो सजवायो,
गिद्दी मखमली बिछाई जी, पाटे पे धरके ।। २ ।।

बोल तेरा साचाँ गर पाऊँ,
सोने सुं तेरी चूंच मढ़ांऊँ,
तन्ने गुलगुला खुवास्युं कागा, लाड करके ।। ३ ।।

''हर्ष'' श्याम ने कांई खुवाऊँ,
कईयां बाँको मान बढ़ाऊँ,
मैं तो बावलो होग्यो हूँ याही, सोच करके ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- छुटेया ना छुटे कभी...)

भूले से ना भुलुं कभी, मै तो तेरा नाम रे,
अब तो ये दर तेरा, मेरे चारों धाम रे,
सांवरे ओरे सांवरे ।। टेर।।

तेरा दर जानुँ बाबा, तुझको ही मानुँ,
और कहीं की क्युँ, खाक मै छानुँ,
कसके कलाई मेरी, आज तु थाम रे,
जिन्दगी ये कर दी है, तेरे नाम रे ।।
सांवरे ओरे सांवरे ।। १ ।।

चान्द बिना कैसे, चान्दनी हो पूरी,
सूरज बिना जैसे, किरणे अधूरी,
जीवन सूना मेरा, बिन तेरे सांवरे,
जिन्दगी का तेरे बिन, क्या दाम रे ।।
सांवरे ओरे सांवरे ।। २ ।।

''हर्ष'' मिलो तो ऐसे, जल में ज्युं धारा,
बहती नदि तु कान्हा, मैं हुँ किनारा,
ठण्डक मिले मुझे, रखना तु छाँव रे,
अँसुओ से धोऊँगा मैं, तेरे पाँव रे ।।
सांवरे ओरे सांवरे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : बस यही अपराध मैं हर बार करता हुँ...)

मन के दर्पण में तेरा दीदार करता हुँ,
सांवरे चरणों से तेरे प्यार करता हुँ ।। टेर।।

भा गया है मुझको तेरा देके ना लेना,
हो सके तो थोड़ी सेवा मुझको दे देना,
सेवा के लायक नहीं स्वीकार करता हुँ ।। १ ।।

हो गया हुँ श्याम तेरा मैं तो दिवाना,
देवता हो तुम अनोखे मैंने पहचाना,
तेरा वंदन मैं सदा दातार करता हुँ ।। २ ।।

''हर्ष'' पे भी पड़ गया है किरपा का साया,
जो सुना था जिन्दगी में सच हुआ पाया,
सोते उठते बंदगी हर बार करता हुँ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(धमाल)

(तर्ज : गर जोर मेरो चाले...)

मनड़े ने लुभावे, भोली सूरत या म्हारे श्याम की,
हूक उठे हिवड़े के माही, बाबा थारे नाम की ।। टेर ।।

लाल गुलाबी, होंठ रसीला, ज्याँपे मुरली प्यारी,
जादूगारी, चितवन थारी, थाँपे म्हें बलिहारी,
चन्द्र किरण भी थारे स्यामी, कोड़ी की ना दाम की ।। १ ।।

मोटी मोटी, आखडल्याँ ने, अइयाँ की मटकावे,
जो भी देखे, वो ही कान्हा, सुध सारी बिसरावे,
झाला देर बुलावे मानो, आखड़ल्याँ घनश्याम की ।। २ ।।

गालां उपर, थारे लटके, या घुघंराली लटकन,
पचरंगी बागो सोवे जी, सोवे प्यारी अचकन,
मोर छड़ी सुं बरसाओ थे, बिरखां ज्युं आराम की ।। ३ ।।

जी में आवे, थारी सूरत, नैणा बीच बसाऊँ,
होले होले, पलक्याँ मांही, झूलो श्याम झुलाऊँ,
''हर्ष'' भगत ने दीज्यो दाता, सेवा आँठु याम की ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गाड़ी बुला रही है...)

मंदिर सजा लिया है, दीपक जला लिया है,
किर्तन में सांवरे के, सबको बुला लिया है ।। टेर ।।

फूलों के हार, सोणा सिंगार, आसन पे श्याम सोहे,
बागा विशाल, वैजन्ति माल, भगतों के मन को मोहे,
चन्दन घिसा लिया है, टीका लगा दिया है ।। १ ।।

ग्यारस की रात, भगतों का साथ, गुणगान मिलके गायें,
झूमे कोई, कोई नाचे, ठुमके कोई लगाये,
हर कोई गा रहा है, ताली बजा रहा है ।। २ ।।

होता आभास, बाबा का आज, मानो लगा हो मेला,
देखो आकर, अन्दर बाहर, भगतों का उमड़ा रेला,
दर्शन जो पा लिया है, सर को झुका लिया है ।। ३ ।।

धन्य वो हाथ, श्रद्धा के साथ, ठाकुर को जो सजाते,
''हर्ष'' करे, उनको नमन, बाबा को जो रिझाते,
तन मन लुटा दिया है, कान्हा को पा लिया है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- मुझे अपनी शरण में लेलो राम...)

दोहा :भटक रहा हुँ माया जग मे, अब तो मेरा हाथ पकड़ले ।
दिलमेभरदेभावकीगंगा,निजभक्तिमेंश्यामजकड़ले।।

मुझे अपनी शरण मे ले लो श्याम,
तोड़ दो सारे माया बंधन, श्री चरण में ले लो श्याम ।।

नाम लिया ना मुख से तेरा, मानुँ सारा दोष है मेरा,
चरण कमल की धूल बनालो, पद पूजन में ले लो श्याम ।। १ ।।

देख पड़ा हुँ शरण मे तेरे, पुण्य की पूँजी पास न मेरे,
श्रृद्धा सुमन चढाऊँ तुझको, निज वंदन मे ले लो श्याम ।। २ ।।

चैन से ना इकपल मैं सोया, चिन्ता में जीवन है खोया,
चिन्ता मेरी नाथ मिटादो, निज चिन्तन में ले लो श्याम ।। ३ ।।

सुनो ना सुनो मरजी तेरी, ''हर्ष'' यही है अरजी मेरी,
जीते जी ना मिलो प्रभु तो, मुझे मरण में ले लो श्याम ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मेरा आपकी कृपा से हर काम हो रहा है...)

मुझे ले चलो जहाँ तुम बाबा वहीं चलुगां,
जिस हाल में भी रखो उस हाल में रहुंगा।। टेर।।

तुमसे छुपा ना कुछ भी हालत बड़ी है खस्ता,
अब देख ले अवस्था करदे मेरी व्यवस्था,
तुमसे जो ना कहुँ तो कहदे किसे कहुँगा ।। १ ।।

ले हाथ थाम मेरा करदे जरा इनायत,
तुमसे कभी न होगी मुझको कोई शिकायत,
तुम जो कहोगे करने बाबा वही करुँगा ।। २ ।।

अब कर दिया है मैंने खुद को तेरे हवाले,
मुझे डूबने दे चाहे गर चाहे तो बचाले,
कहे ''हर्ष'' फैसले को सिर आंखों पे धरुँगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुझे ना देखुं तो चैन मुझे आता नहीं है...)

मुझे श्याम सिवा कोई और, अब भाता नहीं है,
बिन देखे मुझको तो, चैन आता नहीं है,
ये दिल तेरा श्याम, दिवाना हुआ है ।। टेर ।।

तिरछी अदाओं का शिकार हुआ हुँ,
कान्हा मैं तुम्हारा ताबेदार हुआ हुँ,
प्रेम का तुम्हारे मैं तो रोगी हो गया,
श्याम तेरे नाम का मैं जोगी हो गया,
रातें ना गुजरती कन्हैया तेरे बिन,
बिन तेरे कटते ''नहीं ये मेरे दिन''-२
क्या जनमों का अपना कोई नाता नहीं है ।। १ ।।

सुख हो या दुख तुम्हे याद मैं करुँ,
यादों में तुम्हारी ठण्डी आह मैं भरुँ,
हरपल हर घड़ी ध्यान मैं धरुँ,
कभी ना जुदा तु होना सांवरे डरुँ,
कितना तुम्हारा ऐतबार करुँ,
आयेगा तु तेरा ''इंतजार करुँ''-२
दिल काबू में मेरा, रह पाता नहीं है ।। २ ।।

चरणों में अपने बिठाये रखना,
दर का दिवाना तु बनाये रखना,
''हर्ष'' कन्हैया तेरे जाल में फंसा,
उतरे कभी ना प्रभु तेरा ये नशा,
अरजी यही है मेरे श्याम सुनले,
भक्ति तुम्हारी ''मेरे नाम कर दे''-२
दर श्याम तेरे जैसा, मिल पाता नहीं है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जब कोई नहीं आता मेरे श्याम ..)

मुश्किल की घड़ियों में, कोई काम न आया है,
तेरा नाम लिया मन से, तू दौड़ा आया है ।। टेर ।।

किन शब्दों में बाबा, गुणगान करूँ तेरा,
बिन बोले कर डाला, हर काम प्रभु मेरा,
मरुधर में जलधारा, बन कर तु आया है ।। १ ।।

हालात बुरे लेकर, तेरी चौखट पे आया,
जब लौट के देखा तो, मेरा काम बना पाया,
मेरा चेहरा पढ़ करके, मेरा कष्ट मिटाया है ।। २ ।।

जरिया तु बनता है, तुझे देते ना देखा,
तूने ''हर्ष'' बदल दी है, बद किस्मत की रेखा,
मैं जान गया हुँ ये, तेरा किया कराया है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : परदेश जाके परदेशिया ...)

मुस्कान तेरी, सांवरिया, देख दिवाना हुआ,
तनमन सलोने तुझे - २, अर्पण किया ।। टेर।।

इक तेरे दरश की खातिर,
लाख जतन किये, हमने ओ मोहन,
चितवन ने तेरी मोहे -२, घायल किया ।। १ ।।

दिल में तेरी, मोहिनी मूरत,
अनुपम झाँकी, सांवली सूरत,
प्रेम का तेरे मैंने - २, रोग लिया ।। २ ।।

तड़पाओ ना, तरसाओ ना,
इतराओ ना, आ जाओ ना,
कितना ये आतुर - २, ''हर्ष'' हुआ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

हरियाणवी भजन

(तर्ज :- अपणे दिल का हाल...)

मेरे मन की बात बाबा तन्ने बेरा सै,
थोड़ा हक तो साँवरिया तेरे पे मेरा सै ।। टेर।।

मेरे मन की बात बताऊँ, साँचो साँचो हाल सुणाऊँ,
ओर किते ना मागुँ बाबा, तु ना देवे तो कित जाऊँ,
चोखे ना हालात, दिनां का फेरा सै ।। १ ।।

मेरे सिर पे हाथ फिरादे, लायक मन्ने आज बणादे,
तेरे सै के छानी बाबा, सुत्योड़ी तकदीर जगादे,
चरणां मे तेरे, बालक का डेरा सै ।। २ ।।

देख तेरो बेटो यो रोवे, खुंटी ताण के कैयां सोवे,
''हर्ष'' तेरे चरणां ने बाबा, आंसुड़ा ते आज भिगोवे,
मेटदे काली रात, पाछे तो सवेरा सै ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : इक परदेशी मेरा दिल ले गया...)

मेलो आयो खाटु बेगा बेगा सा चालो,
फागणिये में श्याम को निशान ले चालो ।। टेर ।।

हेलो मारे सांवरो क्युँ देर तु लगावे,
टोलियां की टोली जाके श्याम ने रिझावे,
ढ़पली बजावां आवो घूमर घालो ।। १ ।।

बारह महिना पाछे आयो श्याम जी को मेलो,
सांवरे सलूणा संग होली जाके खेलो,
आयो है बुलावो बाबो देवे है झालो ।। २ ।।

रंग सुरंगो मेलो देखबा ने जावागां,
श्याम की दया सुं घणी मौज उड़ावागां,
''हर्ष'' निगोड़ा कइयां बैठ्यो है ठालो ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तुझसे नाराज नहीं जिन्दगी ...)

मैं तो तेरा हुआ सांवरे तेरा रहुंगा,
तुमसे दूरी कभी भी प्रभु मैं ना सहुंगा ।। टेर ।।

माना मैं तेरे लायक नहीं फिर भी निभाना होगा,
प्रेम मेरा मानुं है नया इक दिन पुराना होगा,
गुनगुनाऊँ कभी तेरा ही सदा मेरे होठों पे नाम आता है ।। १ ।।

देखुं मैं तुझे ख्वाबों में सदा तेरे ख्यालों में खोऊँ,
तकलीफों में रोऊँ ना कभी यादों में तेरी मैं रोऊँ,
पलके गिराऊँ तो लगता है जैसे अंखियों में तु बैठा है ।। २ ।।

तुमने अगर मुख मोड़ा तो बोलो कहाँ जाऊँगा,
दूजा दर ना जानु मैं प्रभु लौट इधर आऊँगा,
मेरा दिल गुम हुआ यहां खोया ''हर्ष'' छुपाके रखा था ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : अफसाना लिख रही हुँ...)

मैं तो तेरी कठपुतली, तेरा हुकम बजाऊँगी,
तु डोर हिलाना सांवरिया, मैं नाच दिखाऊँगी ।। टेर ।।

मेरा वजूद कुछ नहीं, ''मैं जड़ हुँ सांवरे - २''
तेरे एक इशारे पर मैं, चेतन हो जाऊँगी ।। १ ।।

मेरी नकेल तो तेरे, ''हाथों में है प्रभु-२''
तु चाहे जिधर घुमाले, मैं घूम जाऊँगी ।। २ ।।

मैं नर हुँ हे नारायण, ''तेरा अंश है मुझमें-२''
जो तेरी रजा है उसमें, राजी हो जाऊँगी ।। ३ ।।

तेरे ''हर्ष'' को दरबार में, ''जितना नचा लेना-२''
दुनिया में नहीं नचाना, मैं थिरक न पाऊँगी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : मैं जिस दिन भुला दुं तेरा प्यार दिल से...)

मैं तुझको भुला दुँ, अगर सांवरे तो,
वो दिन आखिरी हो, मेरी जिन्दगी का
हमेशा रहे तु, मेरे दिल में दानी
सिला इतना देना, तेरी बंदगी का ।। टेर ।।

तुम्ही ने ही पाला, तुम्ही ने सम्भाला,
आफत से हरदम, तुम्ही ने निकाला,
नहीं छोड़ देना, मझधार में तु,
दयालु मैं फिर ना, रहुगां कहीं का ।। १ ।।

मुझे अपने पथ से, भटकने न देना,
जुनुं ये तुम्हारा, उतरने न देना,
तुम्हारा हुँ बाबा, तुम्हारा रहुँगा,
तुम्हारे सिवा मुझको, ना बनना किसी का ।। २ ।।

मेरे सिर पे तेरा, रहे युँही साया,
नसीबों से मैंने, तुमको है पाया,
मेरी धड़कनों में, तेरा नाम गूँजे,
वरना बिखर जाता, ''हर्ष'' कभी का ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये जीवन है इस जीवन का ...)

मैं निर्बल हुँ, इस निर्बल का, तुही है -३, मेरे श्याम,
ओ रे कान्हा, मैं दिवाना, जपुँगा -३, तेरा नाम ।। टेर ।।

तेरा मेरा रिश्ता मानो, जनमों का साथ है,
क्युं मैं घबराऊँ सिर पे, जब तेरा हाथ है,
दूर न करना, थामे रखना, मैं तेरा बालक हुँ ।। १ ।।

छोड़ा मैंने तुझपे दानी, हारना या जीतना,
तेरा हर फैसला अब, मुझको है मानना,
भूल न जाना, ना बिसराना, मैं तेरा पायक हुँ ।। २ ।।

''हर्ष'' की जुबां से निकले, बस तेरा नाम रे,
हुई अगर गलती कोई, माफी देना सांवरे,
भूल क्षमा कर, श्याम दया कर, मैं तेरा याचक हुँ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- तेरा भगत करे तने याद श्याम...)

म्हारी पीड़ हरो घनश्याम आज थाने आयाँ सरसी जी,
थां बिन दीनानाथ आंगली कुण पकड़सी जी ।। टेर ।।

थां बिन म्हारे सिर पे बाबा, ''कुण तो हाथ फिरावे'' -२
सगला मुण्डो फेर के बैठया, ''कुण तो साथ निभावे''-२
मझधारां सु बेड़ो कैयां पार उतरसी जी ।। १ ।।

म्हारी हालत सेठ सांवरा , ''थांसु कोन्या छानी''-२
एक बार थे पलक उघाड़ो, ''देखो म्हारे कानी''-२
थारे देख्याँ बिगड़ी म्हारी श्याम सुधरसी जी ।। २ ।।

आख्याँ स्यामी घोर अंधेरो, ''कुछ ना सूझे आगे'' -२
इब के होसी सोच सोच के, ''म्हाने तो डर लागे''-२
''हर्ष'' म्हारे आगे को रस्तो श्याम ही करसी जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आ लौट के आजा मेरी मीत ...)

म्हारी टेर सुणो दीनानाथ श्याम थाने आणो पड़सी जी,
थारा बेटा करे फरियाद श्याम थाने आणो पड़सी जी ।।

रात्युं ना सोवां यादा में रोवाँ खावाँ तो रोटी ना भावे,
मनड़ो यो तरसे आंखड़ल्याँ बरसे बस थारी ओल्युँ आवे,
म्हारे सिरपे फिरावण हाथ श्याम थाने आणो पड़सी जी ।। १ ।।

करमा सी कोन्या सकलाई बाबा कईयाँ म्हें थाने बुलावाँ,
प्रेम भरयो है हिवड़े में म्हारे आओ जी थाने दिखावाँ,
देस्यां प्रीत की म्हे सौगात श्याम थाने आणो पड़सी जी ।। २ ।।

कलजुग रा सांचा देव कुहावो नाम सुण्यो थारो भारी,
प्रीत डोर सुं बंधकर आवो बाबा सुध ल्यो म्हारी,
राखो ''हर्ष'' भगत री बात श्याम थाने आणो पड़सी जी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये रातें ये मौसम नदि का किनारा ...)

ये आँखे नशीली, ये भोली सी चितवन, ये चंचल अदा,
तेरी इस सलोनी, छवि पे सलोने, हुए हम फिदा ।। टेर ।।

वो क्या बात है श्याम तुझमें बता दे,
जो देखे उसी को दिवाना बना दे,
ये बाँकी अदाये, ये तिरछीं निगाहें,
कोई इनसे बचने क्या पाये बता ।। १ ।।

तुम्हारी ये मुस्कान जादु भरी है,
अधर पे ये प्यारी सी बंशी धरी है,
है कानों में कुण्डल, गले में है माला,
सुहानी ये चितवन है सबसे जुदा ।। २ ।।

चुराते हो दिल क्युं अरे मान जाओ,
प्रेमी है हम तो तेरे जान जाओ,
तेरे हो चुके हैं, ये दिल खो चुके हैं,
कहे ''हर्ष'' तेरे रहेगें सदा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ये पर्दा हटादो जरा मुखड़ा दिखादो..)

ये परदा हटादो, हमे दर्शन दिखादो,
तेरे द्वार के दिवाने हैं कोई गैर नहीं,
अरे हम तेरे चाहने वाले हैं कोई गैर नहीं ।। टेर ।।

बड़ी दूर से चलकर बाबा, तेरे द्वारे आये,
काहे हमको देखके बैठे, मुखड़ा आज छुपाये,
दिखलादो सूरत प्यारी, हो पूरी आस हमारी ।।
तेरे द्वार ...।। १ ।।

तुमको डर है नजर कहीं, भगतों की ना लग जाये,
मत घबराओ काला टीका, दास तेरे हैं लाये,
काला टीका लगवालो, मिर्चि नींबू टंगवालो ।।
तेरे द्वार ...।। २ ।।

''हर्ष'' भला क्युं छुपके बैठे, काहे की मजबूरी,
हम तो तेरे अपने हैं, अपनों से कैसी दूरी,
चरणों में श्याम बिठालो, चाहे फिर गले लगालो ।।
तेरे द्वार ...।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : इशारों इशारों में...)

ये भोली सी सूरत ये बाँकी अदायें,
मेरे श्याम तुमने क्या जादु चलाया,
ये तिरछी निगाहों के तीर चलाना,
बता दे हुनर ये कहाँ से है पाया ।। टेर ।।

मेरे मन में कब बस गये, मुझे कुछ नहीं है पता,
मुझे जिसने वश में किया, ''यही है वो तेरी अदा''-२
ये होठों पे मुस्कां, ये गालों पे गेसु,
तेरा ये तिलस्म ना कोई जान पाया ।। १ ।।

निगाहों से घायल करे, निगाहें मिलाऊँ मैं क्या,
हटाये ना इक पल हटे ''निगाहें हटाऊं भी क्या''-२
मैं डूब चुका हुँ, सलोनी छवि में,
ना सोचा कभी क्या है खोया क्या पाया ।। २ ।।

तेरे जाल में फँस गया, निकालो मुझे अब जरा,
तेरे प्यार में लुट गया, ''सम्भालो मुझे अब जरा''-२
तेरी इस अदा पे, मैं कुरबान जाऊँ,
कहे ''हर्ष'' तुमने दिवाना बनाया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : अपणे दिल का हाल ....)

रुस्या कइयाँ श्याम बताणो पड़सी,
टाबरिया बुलावे बाबा आणो पड़सी ।। टेर ।।

म्हे टाबर थे मायत स्याणा, भलो बुरो म्हे कुछ ना जाणा,
म्हांसु रुस्याँ कइँया सरसी, म्हें तो थारा दास पुराणा,
म्हारे सिर पे हाथ फिराणो पड़सी ।। १ ।।

भूल चूक की माफी चावाँ, राजी होजा श्याम मनावाँ,
नाराजी थे मेटो बाबा, चरणां माही शीश झुकावाँ,
बालकिया ने श्याम निभाणो पड़सी ।। २ ।।

''हर्ष'' भरोसो म्हाने भारी, अरजी सुणसी श्याम हमारी,
लूक मीचणी मतना खेलो, आदत म्हें जाणा हाँ थारी,
बाबा म्हारो मान बढ़ाणो पड़सी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :- आयेगी-३ किसी को हमारी याद आयेगी...)

रोया था रोया हुँ रोऊँगा, सांवरे तुम्हारे लिये रोऊँगा,
तु मीत हमारा है, हमें जान से प्यारा है,
खोया था खोया हुँ खोऊँगा, याद में तुम्हारी मै खोऊँगा ।।

आँखों मे तुझे सजाया है पलकों पे तुझे बिठाया है,
तु माने ना माने मोहन इस दिल में तुझे बसाया है,
विरहा का तेरा, मै दर्द सदा,ऐ श्याम युँही ढ़ोऊँगा ।। १ ।।

उम्मीद का तानाबाना है मेरा तो यही फसाना है,
कुछ भी चाहे अब हो जाये इक दिन तो तुझको पाना है,
चरणों को तेरे, इन अंसुओ से,मै श्याम युहीं धोऊँगा ।। २ ।।

तेरा ''हर्ष'' न जागे सोता है बस याद मे तेरी रोता है,
दर्शन को तरसता रहता है मिलने को व्याकुल होता है,
दीदार तेरा,जब तक ना हो, मै चैन से ना सोऊँगा ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : वीर हनुमाना अति बलवाना ...)

लीले की सवारी, तीन बाण धारी,
बाबा मेरी सुध लीज्यो, टाबरां पे ध्यान दीज्यो।। टेर।।

हारे को सहारो, नाम है तिहारो,
जीत को वर दीज्यो, टाबरां पे ध्यान दीज्यो ।। १ ।।

टाबरियो माड़ो, दे द्यो थे झाड़ो,
रोग मिटा दीज्यो, टाबरां पे ध्यान दीज्यो ।। २ ।।

पायक हुँ थारो, श्याम हमारो,
हाथ पकड़ लीज्यो, टाबरां पे ध्यान दीज्यो ।। ३ ।।

''हर्ष'' की सुणियो, किरपा करियो,
शरणां में लीज्यो, टाबरां पे ध्यान दीज्यो ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : चन्ना मेरेया मेरेया...)

विनती करता हुँ पनाहों में श्याम रखना,
मेरी फिक्र तु जरा आठों याम रखना,
अपने श्री चरणों में मेरा भी मुकाम रखना,
अपने बच्चों में भी प्रभु मेरा नाम रखना,
अंधेरा मेरा तूने हर लिया मेरा रोशन सितारा तूने श्याम किया,
कान्हा मेरे ओ मेरे ओ, कान्हा मेरे ओ मेरे ओ, कान्हा
मेरे ओ मेरे ओ साँवरे, ओ कान्हा... ।। टेर ।।

आँखों से अपनी, ओझल ना रखना, ''जी ना सकुगां''-२
तुमसे जुदा हो, अरे लीले वाले, ''रह ना सकुगां''-२
तुमने मुझे चरणों की सेवा देके मुझपे दयालु अहसान किया ।।

तुमसे ये मेरी, नजदीकियां है, ''कम तो नहीं है''-२
दुनिया से चाहे, अब दूरियां है, ''गम तो नहीं है''-२
साथी मुझे तुमसा मिला है तूने किरपा का बाबा मुझे दान दिया ।।

सोऊँ तो तु ही, सपनों में आये, ''कैसा जुनुं है''-२
''हर्ष'' बसी है, नैनों में सूरत, ''दिल को सुकुं है''-२
अब तो प्रभु जिन्दगी को मेरी मैंने श्याम सलोने तेरे नाम किया ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आये हो मेरी जिन्दगी में ...)

वो दिन कभी ना आये, जीवन में मेरे श्याम,
जिस दिन जुबां से मेरी, निकले ना तेरा नाऽऽऽम ।। टेर ।।

तुमसे जो लौ लगी है, कभी टूटने ना पाये,
तेरी प्रीत का ये धागा, कभी छूटने ना पाये,
ध्याता रहुँ कन्हैया, तुझको मैं आठो याम ।। १ ।।

जबसे तुझे है पाया, दुनिया को है भुलाया,
तेरी दया की युही, मेरे सिर पे होवे छाया,
इस मतलबी जहाँ से, अब ना है कोई काम ।। २ ।।

तेरे नाम के ये मोती, साँसो में मैं पिरो लुँ,
अनुपम छवि तुम्हारी, हृदय में मैं सँजो लुँ,
कहे ''हर्ष'' मैं निहारूँ, तुझको ही सुबहो शाम ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

स्वर बद्ध :-अतुल कृष्ण (वृन्दावन)

श्याम अपनी शरण लीजिये, मोहे
किरपा करुणा-करण कीजिये, मोपे ।। टेर ।।

गम का मारा बड़ा हुँ हरि मै तो,
मेरे गम का हरण कीजिये, बिहारी ।। १ ।।

बोझ पापों का दिल पे मेरे है भारी,
हलका गिरिवर-धरण कीजिये, गिरधारी ।। २ ।।

मैं भी तर जाऊँ भव से प्रभु ओ खिवैया,
दया तारण-तरण कीजिये, मुरारी ।। ३ ।।

''हर्ष'' धो धो के पीता रहुँ मैं ठाकुर,
बढ़ा अपने चरण दीजिये, बनवारी ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गोरी तेरा गांव बड़ा प्यारा..)

श्याम तेरे नैन मतवाले, अमृत के प्याले,
रास रचैया - रास रचैया,
तिरछी चितवन है प्यारी, झाँकी मनुहारी,
चैन चुरैया - चैन चुरैया ।। टेर ।।

अधरन पे है, श्याम सलोने, बांसुरिया ये प्यारी,
गल फूलों के, हार सुहाने, शोभा है बड़ी भारी,
तन पे बागा पचरंगी, माथे पे किलंगी,
ओ रे कन्हैया - ओ रे कन्हैया ।। १ ।।

जी करता है, श्याम तुम्हें मैं, जीवन भर यु देखुं,
अनुपम प्यारा, रूप तुम्हारा, दिल में आज बसालुं,
सुनके मीठी-मीठी ताने, हुये मस्ताने,
बंशी बजैया - बंशी बजैया ।। २ ।।

''हर्ष'' हुये रे, घायल हम तो, ऐसे ना मुस्काओ,
दिवानों के, दिल पे कान्हा, युं ना तीर चलाओ,
मन को सांवरे ये भाये, मोहनी अदायें,
जादु चलैया - जादु चलैया ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : प्यार दिवाना होता है ...)

श्याम शमां तु है तो मैं परवाना तेरा हुँ,
मान भी जा कई जनमों से दिवाना तेरा हुँ ।। टेर ।।

प्रभु सदा राजी हुँ मैं, तेरी रजा में,
भरी हुई खुशबु तेरी, सारी फिजा में,
जो रहे मस्ती में वो, मस्ताना तेरा हुँ ।। १ ।।

जहां जहां मेरा कान्हा, वहीं सदा हुँ,
कभी मेरे सांवरिये से, नहीं जुदा हुँ,
भूल सको ना मुझको वो, पहचाना चेहरा हुँ ।। २ ।।

दया तेरी मुझको दाता, सदा मिली है,
कली मेरे मन की बाबा, सदा खिली है,
''हर्ष'' ना बिसराना तु मैं, कान्हा तेरा हुँ ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

श्याम ही चन्दा, श्याम ही तारे, सूरज मेरा श्याम,
चमकता श्याम हमारा, करे जग में उजियारा ।। टेर ।।

भजनों का प्रेमी है ये भावों का रसिया,
श्रद्धा से रीझता है मेरा मन बसिया,
श्याम ही अर्पण, - श्याम समर्पण, भजन भाव है श्याम ।।
चमकता श्याम ... ।। १ ।।

गौर से देखो कान्हा ज्योत में विराजे,
बंशी बजाता मोहन लपटों में लागे,
श्याम ही दीपक, श्याम ही बाती, लौ में बसता श्याम ।।
चमकता श्याम ... ।। २ ।।

''हर्ष'' बिना मरजी के हिलता न पत्ता,
चारों दिशाओं में है सांवरे की सत्ता,
जगमग ज्योति, श्याम से होती, हीरे मोती श्याम ।।
चमकता श्याम ... ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : साँस देना प्रभु इतनी तो कम से कम ...)

श्याम सुनते सदा, इक भरोसा तो कर,
तेरा नम्बर भी आयेगा, धीरज तू धर ।। टेर ।।

कोई शिकवा ना कर, ना उलाहना कोई,
बंदे दिल में कभी, ''शक ना लाना कोई''-२
इनपे तेरी दुआ, का भी होगा असर ।। १ ।।

देर हो भी अगर, कुछ ना सोचो कभी,
पुण्य होगें उदय, ''काम होगा तभी''-२
कोई चिन्ता ना कर, ना कोई कर फिकर ।। २ ।।

देख करके करम, फैसला ये करे,
जैसी करनी तेरी, ''वैसी झोली भरे''-२
''हर्ष'' करले जरा, प्यारे थोड़ा सबर ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : प्यार हमारा अमर रहेगा..)

श्याम हमारी बाँह पकड़लो और ना दूजा कोई,
मैं निर्बल हुँ हे बलशाली ना तेरा जैसा कोई ।। टेर ।।

तु जो बनाये कौन मिटाये, होते तेरे फिर कौन डराये,
तेरी शरण में गर हो ठिकाना, और भला हम कुछ ना चाहें,
तू सागर है मन की नदी ये, तुझमें मिल के खोई ।। १ ।।

एक दफा जो दामन पकड़े, कुछ भी हो पर तु ना छोड़े,
तूफानों का वेग दयालु, पल भर में तु उलटा मोड़े,
याद में तेरी छलक पड़ी है, आँख मेरी ये रोई ।। २ ।।

तु निश्चल है ना कोई छल है, पावन जितना गंगाजल है,
''हर्ष'' दिवाना देव दयालु, तेरी दया का ही कायल है,
श्याम सलोने कितनों पर ही, महर तेरी ये होई ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : जीने को तो जीते हैं सभी ...)

श्याम की करूँ मैं बंदगी, श्याम बिना कैसी जिन्दगी,
साँवरे के संग ही सुख दुख बाँटु, दूजा नहीं है कोई,
हम सफर है वो ही...।। टेर ।।

जबसे दयालु तेरा दर ये मिला,
मन का ये मुरझाया फूल है खिला,
लुटाता, हमारे, लिये तु, सारी खुशी ।। १ ।।

तुमने किये है जो भी मुझपे करम,
उनको भुला ना पाऊँ लेले तु कसम,
तुम्ही ने, जिया में, जलाई, लौ प्यार की ।। २ ।।

''हर्ष'' हमारा तो है ये ही अरमां,
सामने हो तु और निकले ये जां,
घड़ी वो, मिलन की, तो होगी, सबसे हँसी ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : तेरी अदाओं पे मरता हुँ ...)

श्याम शरण में आ जा रे,
हर लेगा, दुखड़े सारे,
श्री चरणों में शीश झुका, कर देगा वारे न्यारे ।। टेर।।

मारा मारा बंदे तु क्युं फिरता है,
श्याम धणी सारे दुख हरता है,
एक दफा बस खाटु आजा,
बैठा वहां राजाओं का राजा,
हर लेगा दुखड़े सारे, कर देगा वारे न्यारे ।। १ ।।

सब कुछ छोड़ के आजा प्यारे,
सच कहता हुँ ना घबरा रे,
रोते हुए के ये आँसु पोंछे,
देर करे क्युं क्या तु सोचे,
हर लेगा दुखड़े सारे, कर देगा वारे न्यारे ।। २ ।।

मोर छड़ी जब श्याम घुमाये,
हर आफत को दूर भगाये,
शरणागत का बने सहारा,
''हर्ष'' दयालु देव हमारा,
हर लेगा दुखड़े सारे, कर देगा वारे न्यारे ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : शायद आ जायेगा साकी को तरस ...)

शायद आ जायेगा बाबा को तरस अबकी बरस,
मिल भी जाये इन आँखों को दरश अबकी बरस ।। टेर ।।

जब से देखा है उन्हें होश नहीं है मुझको,
बढ़ गई और भी मिलने की कसक अबकी बरस ।। १ ।।

उनके विरहा में इन आँखों ने बरसना सीखा,
उनकी यादों ने रुलाया है तो बस अबकी बरस ।। २ ।।

अब ये दूरी भी सही जाये नहीं उनसे,
कोई दे दे उन्हें जाके ये खबर अबकी बरस ।। ३ ।।

कितने अरमान लिये ''हर्ष'' निहारे रस्ता,
शायद हो जायेगा आहों का असर अबकी बरस ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : शिकवा नहीं किसी से किसी से गिला नहीं...)

शिकवा करूँ मैं कैसे, कोई नहीं गिला,
नसीब से भी ज्यादा, मुझको तो है मिला ।। टेर ।।

तु मिल गया कन्हैया, दुनिया नई मिली,
तेरा साथ पाके मेरे, मन की कली खिली,
मुरझाया बाग मेरा, तुमसे ही तो खिला ।। १ ।।

गुणगान में तुम्हारे, बीते हैं मेरे दिन,
रहता था तनहा तनहा, बाबा तुम्हारे बिन,
भजनों का तेरे दाता, चलता है सिलसिला ।। २ ।।

स्वीकार हो गई है, दिल की मेरी दुआ,
तेरे ''हर्ष'' पे दयालु, रखना तेरी दया,
उम्मीद ना थी जिसकी, मुझको तो वो मिला ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : म्हारे सिर पर है बाबा जी...)

सारी दुनिया में गूँजे थारो नाम, खाटु का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ।। टेर ।।

निर्बल का बल, निर्धन का धन थारो रुतबो न्यारो,
हार्योड़ा की जीत करावे बाबो श्याम हमारो,
बाबा दरदी ने देवो थे आराम, खाटु का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ।। १ ।।

जो कोई लेवे थारो आसरो बैठयो मौज उड़ावे,
खूंटी ताण के सोवे बीने चिन्ता नहीं सतावे,
बैंका थे ही बणाओ सारा काम, खाटू का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ।। २ ।।

बिन पाणी के नाव चलावो ऐसी है सकलाई,
आख्याँ पढ़के ''हर्ष'' भगत की आप ही करो सुणाई,
थारे देरी को कोन्या-कोई काम, खाटु का बाबा श्याम,
माया तो थारी थे ही जाणो ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : सावँली सूरत पे मोहन...)

सिलसिला खाटू में बाबा, आने का टूटे नहीं,
श्याम के भगतों का प्यारा, साथ ये छूटे नहीं ।। टेर ।।

भाव भक्ति की यहाँ पे, फूटती जो धार है,
तेरे खाटू के अलावा, और ना फूटे कहीं ।। १ ।।

लूटता हूँ मस्तियाँ मैं, श्याम तेरे नाम की,
मस्तियों का ये अखाड़ा, सांवरे छूटे नहीं ।। २ ।।

सारे रिश्तों से बड़ा है, श्याम का परिवार ये,
प्रीत की डोरी हमारी, देख ना टूटे कहीं ।। ३ ।।

छूट भी जाये जमाना, मुझको कोई ना गिला,
''हर्ष'' की मंजिल तुही है, दर तेरा छूटे नहीं ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ज्योत से ज्योत जगाते चलो ...)

सुख के दीप जलादो प्रभु, गम के अंधेरे मिटादो प्रभु,
दुनिया में कोई दीन न हो, सबको लायक बनादो प्रभु ।।

हर प्राणी में अंश है तेरा, सब में तुही समाया,
दुखड़ों की कहीं धूप खिली है, कहीं पे सुख की छाया,
जीना सभी को सिखादो प्रभु ।। १ ।।

नरतन चोला सिरजन हारे, तूने ही तो बनाया,
तेरे रहते तेरा बंदा, दुखिया क्युँ कहलाया,
सुखमय हमें भी बनादो प्रभु ।। २ ।।

कोई तन से कोई मन से, कोई धन से रोगी,
''हर्ष'' सुखी तो इस दुनिया में, हरी नाम का जोगी,
धर्म की राह दिखादो प्रभु ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : फिल्म - कभी अलविदा ना कहना)
(सोनु निगम)

सुनले ओ साँवरे मेरी ये इल्तजा,
चरणों से मैं कभी भी रहुँ ना जुदा,
दूर होना ना मुझसे, मानो बस इतना सा कहना,
मेरी साँसों में तुम रहना, मेरी आँखों में तुम रहना,
मेरी धड़कन में तुम रहना ।। टेर ।।

दर ये तुम्हारा, मुझको मिला तो, मानो नई कोई, दुनिया मिली,
देखा तुझे तो, मन की ये मेरे, मुरझाई कलियाँ, ''फिर से खिली-२''
दूरियाँ ना सह पाऊँगा, बिन तेरे ना इक पल है चैना ।।

जितना भी चाहुँ, भूल मैं जाऊँ, इक तेरी याद है कि, जाती नहीं
दर्पण में दिल के, देखुँ तुझे ही, देखे बिना चैन, ''आता नहीं-२''
झाँक कर अपने हृदय में, तुमको मैं बस देखुँ दिन रैना ।।

दुनिया भी चाहे, बदल क्युँ ना जाये, मेरा श्याम मुझसे, बदले नहीं
दिल में तु बैठा, आसन लगाये, मन से कभी तु, ''निकले नहीं-२''
बिन तेरे ये जीवन सूना, ''हर्ष'' की नस नस में तु रहना ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज :-दिल ने फिर याद किया...)

सुनले फरियाद मेरी आखँ ये भर आई है,
मेरी तकदीर मुझे खीचँ इधर लाई है ।। टेर।।

गैर के दरपे इन हाथों को पसारा ना कभी,
ये भी क्या कम है मुझे तुमने बिसारा ना कभी,
तुमसे उम्मीद मुझे आज नजर आई है ।। १ ।।

क्या बताऊँ तुम्हे ऐ श्याम ये किस्मत क्या है,
गम में जलता हुँ सदा देखले हालत क्या है,
धूल गर्दिश की निगाहों में उतर आई है ।। २ ।।

मैं वो दिवाना हुँ जो आपका दम भरता है,
श्याम के नाम से मदहोश रहा करता है,
चोट दुखड़ो की ऐ ''हर्ष'' उभर आई है ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : गोरों की ना कालों की....)

सेवा करने वालों का, बाबा है दिल वालों का,
करमा का है मीरा का है, उन जैसे मतवालों का ।। टेर।।

गाँव गाँव और गली गली में घूमे सुबहो शाम,
श्याम नाम की अलख जगाये वो तो आठों याम,
ना हीरे ना मोती भगतों से इनको प्यार ।। १ ।।

झूठी जग की माया सच्ची श्याम नाम की माया,
श्याम नाम जपने वालों ने श्याम खजाना पाया,
ना रूपिया ना पैसा भजनों से इनको प्यार ।। २ ।।

पैसे वाले ''हर्ष'' बिसारे बाबा गले लगाये,
दुनिया का हर सेठ यहां पे हाथों को फैलाये,
निर्बल से निर्धन से दुखियों से इनको प्यार ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : आदमी मुसाफिर है आता है जाता है...)

हारे का सहारा है दुनिया दिवानी है,
लीले घोड़े वाले का जग में कौन सानी है ।। टेर।।

बाबा के जैसा दानी न दूजा,
घर घर में इनकी होती है पूजा,
लीला कहो किसने जानी है ।। १ ।।

कहना पड़े ना सब ये समझता,
चेहरे को पढ़के दुखड़ों को हरता,
महिमा बड़ी सबने मानी है ।। २ ।।

थामा है जिसको उसको ना छोड़े,
तूफानों का मुख पल में ये मोड़े,
इनके जैसा ना बलवानी है ।। ३ ।।

''हर्ष'' हवाले कर दे तु नैया,
तेरा बनेगा फिर ये खिवैया,
किरपा हमें इनकी पानी है ।। ४ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : अबतो है तुमसे हर खुशी अपनी ...)

हिचकी आवे रे, सांवरा मन्ने,
याद भगतां री, आवे के तन्ने ।। टेर ।।

रात्युं ना सोवुं थारी, यादां में खोवुँ,
मिलणे के तांई थाँसु, झुरझुर मैं रोवुँ,
थे ही बताओ बोलुं, पीड़ मैं कीने ।। १ ।।

बावलो बतावे मन्ने, सगलो जमानो,
चरणां में थारे दे द्यो, इब तो ठिकाणो,
बाबा बुलाल्यो जी, म्हाने भी शरणे ।। २ ।।

म्हारी याद थाने भी तो, आती तो होसी,
म्हारी जईंया थाने भी तो, रुलाती तो होसी,
''हर्ष'' बिठाल्यो जी, चरणां के खन्ने ।। ३ ।।

श्री श्याम वन्दना

(तर्ज : ऐ मेरे हम सफर इक जरा...)

है मुझे सांवरे बस तेरा इन्तजार,
इम्तहां ना ले दयालु मेरे प्यार का ।। टेर ।।

सांवरे सदा ही रखा है, तुमने भगत का मान,
तुमको ही बाबा करने, पूरे मेरे अरमान,
तोहफा ही मिलेगा मेरे प्यार का ।। १ ।।

बनके प्रभु आ जाओ, घर में मेरे मेहमान,
मैंने संजोया है तेरे, स्वागत का सामान,
जलवा तो दिखेगा मेरे प्यार का ।। २ ।।

''हर्ष'' बनो ना मेरे ठाकुर, सेवक से अनजान,
प्रेम सुधा रस पीते, भक्त के घर भगवान,
प्याला तू पियेगा मेरे प्यार का ।। ३ ।।

क्षमा याचना

दीन बंधु मैं नतमस्तक हो, मांग रहा हुँ आज क्षमा ।।

कर्म वचन मन काया से, मुझसे जो अपराध हुआ ।।

जाने अनजाने की वो भूलें, आज मेरी तुम माफ करो ।।

तनमन के सब दोष मिटा दो, मुझको निर्मल साफ करो ।।

चाहे कुछ भी हो जाये पर, सच की राह नहीं छोडुं ।।

ऐसा दो आशीष प्रभु मैं, किसी के दिल को ना तोडुं ।।

माया में लिपटा प्राणी हुँ, घड़ा पाप का मैं भरता ।।

लेकिन तुम तो परमेश्वर हो, हमें माफ फिर भी करता ।।

''हर्ष'' कहे मैं परमपिता की, इतनी सी किरपा चाहुँ ।।

कालन्तर की भूलों को मैं, दोबारा ना दोहराऊँ ।।

श्री श्याम आरती

(तर्ज : भोर भई दिन चढ़ गया मेरी अम्बे...)

ज्योत जले बाबा, जगमग भवन में,
हो रही जय जयकार प्रभु तेरी आरती जय श्याम,
हे खाटु वाले आरती जय श्याम ।। १ ।।

चन्दी सिंहासन बाबा, आप बिराजो,
चँवर ढुरे घनश्याम भवन में आरती जय श्याम,
हे लीले वाले आरती जय श्याम ।। २ ।।

केशरिया बागा सोहे, कानों में कुण्डल,
गल पुष्पों के हार भवन में आरती जय श्याम,
हे शीश के दानी आरती जय श्याम ।। ३ ।।

शंख नगाड़ा बाजे, बाजे मृदंगा,
भक्त करे गुणगान भवन में आरती जय श्याम,
हे मुरली वाले आरती जय श्याम ।। ४ ।।

खीर चूरमें के, थाल सजे हैं बाबा,
भोग लगे दीनानाथ भवन में आरती जय श्याम,
अहिला के लाला आरती जय श्याम ।। ५ ।।

सोने की थाली में, चान्दी का दिवला,
झलिमिल जले है बाती भवन में आरती जय श्याम,
हे मंगल कारी आरती जय श्याम ।। ६ ।।

''हर्ष'' कहे जो भी, जस तेरा गावे,
हो जावे कल्याण भवन में आरती जय श्याम,
भक्तन रखवारे आरती जय श्याम ।। ७ ।।

श्री श्याम जी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय ।।

रतन जड़ित सिंहासन, सिर पर चंवर ढुरे ।
तन केशरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।। ॐ जय ।।

गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ।। ॐ जय ।।

मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।। ॐ जय ।।

झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय-जय कार करे ।। ॐ जय ।।

जो ध्यावे फल पावे, सब दुख से उबरे ।
सेवक जन निज मुख से, श्री श्याम-श्याम उचरे ।। ॐ जय ।।

श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत ''आलूसिंह'' स्वामी, मनवाछिंत फल पावे ।। ॐ जय ।।

जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
निज भक्तों के तुमने, पूरण काम करे ।। ॐ जय ।।

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रधुनाथ कला की ।।

जांके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष भय निकट न झांपे ।।

अंजनी पुत्र महा बलदायी, संतन के प्रभू सदा सहाई ।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये ।।

लंका-सी कोट समुद्र-सी खाई,जात पवनसुत बार न लाई ।।

लंका जारी असुर सब मारे, सियाराम जी के काज सँवारे ।।

लक्ष्मण मुर्छित पड़े धरणी पर, आन संजिवन प्राण उबारे ।।

पैठी पाताल तोरि यमकातर, अहिरावण की भुजा उखारे ।।

बाँये भुजा सब असुर संहारे, दाहिने भुजा सब संत उबारे ।।

सुरनर मुनिजन आरती उतारे, जै जै जै हनुमानजी उचारे ।।

कंचन थाल कपूर की बाती, आरती करत अञ्जनी माई ।।

जो हनुमानजी की आरती गावे, बसि बैकुण्ठ परम पद पावे ।।

लंक विध्वंस किये रघुराई, तुलसी दास स्वामी कीरति गाई ।।